20 धरती की शान

पंडित भरत व्यास

पंडित भरत व्यासजी हिन्दी साहित्य जगत के जाने-माने गीतकार रहे हैं। आपका जन्म राजस्थान के चुरू नामक क स्बे में हुआ था। आपने कई गीत-काव्यों की रचना की है। आपकी गीत रचनाएँ हिन्दी फिल्मों में भी ली गई हैं। आपकी रचनाओं में विभिन्न मानव मूल्य प्रस्थापित हुए हैं।

प्रस्तुत गीत सन् 1958 में आई-हिन्दी फिल्म गाँव की गोरी से लिया गया है । इस गीत में मनुष्य की महत्ता को देखते हुए मनुष्य को सबसे बुद्धिमान बताया है। मनुष्य ने अपनी बुद्धि और कठोर परिश्रम के बल पर जल, थल और नभ में तमाम उपलब्धियाँ अर्जित की हैं। मनुष्य ने अपनी शक्ति से प्रकृति को बहुत सीमा तक अपने अनुकूल ढालने में सफल हुआ है। कवि बताते हैं- मनुष्य की शक्ति के सामने कोई भी कार्य असंभव नहीं है। मनुष्य जो चाहे, वह प्राप्त कर सकता है। यानी कि मनुष्य ही धरती की शान है। यही भाव काव्य में अन्तर्निहित है। यही हमारी महानता का प्रमाण है।

धरती की शान तू भारत की संतान,
तेरी मुट्ठियों में बंद तूफान है रे,
मनुष्य तू बड़ा महान है॥

तू जो चाहे पर्वत पहाड़ों को फोड़ दे,
तू जो चाहे नदियों के मुख को भी मोड़ दे,
तू जो चाहे माटी से अमृत निचोड़ दे,
तू जो चाहे धरती को अम्बर से जोड़ दे,
अमर तेरे प्राण, मिला तुझको वरदान
तेरी आत्मा में स्वयं भगवान है रे ॥1॥

नयनों में ज्वाल, तेरी गति में भूचाल,
तेरी छाती में छिपा महाकाल है,
पृथ्वी के लाल तेरा हिमगिरि-सा भाल,
तेरी भृकुटी में तांडव का ताल है,
निज को तू जान, जरा शक्ति पहचान
तेरी वाणी में युग का आह्वान है रे ॥2॥

धरती-सा धीर, तू है अग्नि-सा वीर,
तू जो चाहे तो काल को भी थाम ले,
पापों का प्रलय रुके, पशुता का शीश झुके,
तू जो अगर हिम्मत से काम ले,
गुरु-सा मतिमान, पवन-सा तू गतिमान,
तेरी नभ से भी ऊँची उड़ान है रे ॥3॥

शब्दार्थ और टिप्पणी

हिमगिरि हिमालय पर्वत **ज्वाल** अग्निशिखा, लौ **शान** गौरव, ऐश्वर्य, वैभव **मुख** प्रवाह, **भृकुटी** भौंह, **काल** समय (वह सम्बन्ध सत्ता जिसके द्वारा भूत, भविष्य और वर्तमान की प्रतीति होती है।) **मतिमान** बुद्धिमान, विचारवान **प्रलय** नाश, विनाश **आह्वान** पुकार **भाल** मस्तक, कपाल **ललाट** निज, अपना

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

(1) कवि की दृष्टि में सर्वाधिक महान कौन है ?

(2) आप क्या-क्या कर सकते हैं ?

(3) अन्य जीवों से मनुष्य महान कैसे है ?

(4) धरती-सा धीर किसे कहा गया है ?

(5) धरती की शान कविता के रचयिता कौन हैं ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर सविस्तार लिखिए :

(1) कविता में कवि ने किन प्राकृतिक दृश्यों का चित्रण किया है ? कैसे ?

(2) प्रस्तुत कविता में मनुष्य के प्रति किस भाव की अभिव्यक्ति हुई है, और उससे हमें क्या प्रेरणा मिलती है ?

(3) धरती की शान से कवि का क्या तात्पर्य है ? भाव स्पष्ट कीजिए ।

(4) मनुष्य के लिए कोई भी कार्य असंभव नहीं है काव्य के आधार पर अपने विचार प्रकट कीजिए ।

(5) धरती की शान कविता का केन्द्रीय भाव स्पष्ट कीजिए।

3. निम्नलिखित काव्य-पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए :

(1) गुरु-सा मतिमान,
पवन-सा तू गतिमान,
तेरी नभ से भी
ऊँची उड़ान है रे ।

(2) धरती की शान,
तू भारत की संतान
तेरी मुट्ठियों में
बंद तूफान है रे

4. निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए :

भूचाल, हिमगिरि, वाणी, तूफान, अमृत, धीर, हिम्मत, नभ, निज

5. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए :

अमृत, अम्बर, अमर, धीर, वीर, पाप, जीवन

6. सही विकल्प चुनकर लिखिए :

(1) तू जो चाहे पर्वत पहाड़ों को....

(अ) मोड़ दे (ब) फोड़ दे

(क) तोड़ दे (ड) जोड़ दे

(2) पृथ्वी के लाल तेरा हिमगिरि-सा .....

(अ) हाल (ब) भाल

(क) काल (ड) मिसाल

(3) ..... को तू जान, जरा शक्ति पहचान

(अ) निज (ब) स्वयं

(क) खुद (ड) स्व

(4) तू जो अगर हिम्मत से ..... ले

(अ) ठान (ब) जान

(क) काम (ड) पहचान

7. काव्य-पंक्तियाँ पूर्ण कीजिए :

(1) धरती ..... महान है ।

(2) तू जो ..... उड़ान है रे।

योग्यता-विस्तार

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- प्रस्तुत गीत कंठस्थ कीजिए ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- धरती की शान गीत का सस्वर गान करवाइए ।

●

21 क्रान्तिकारी शेखर का बचपन

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन

(जन्म : सन् 1911 ई. : निधन : सन् 1987 ई.)

आधुनिक हिन्दी काव्यधारा में नई कविता के प्रमुख कवि एवं बहुचर्चित उपन्यासकार के रूप में 'अज्ञेयजी' का नाम एवं प्रदान उल्लेखनीय है। उनका जन्म 9 मार्च, 1911 में कसया (कुशीनगर) में हुआ। बचपन का 1911-1915 का समय लखनऊ में बीता। बाद में कुछ समय के लिए वे श्रीनगर और जमू में रहे। उन्होंने लाहौर के एक कालेज से बी.एससी. की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। क्रान्तिकारी दल में सक्रिय भाग लेने के कारण उन्हें कारागार में रहना पड़ा। उन्होंने 'सैनिक' और 'विशाल भारत' का संपादन भी किया। कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय में भारतीय साहित्य और संस्कृति के अध्यापक के रूप में काम किया। अज्ञेयजी विद्रोही व्यक्ति रहे है। विद्रोह उनके साहित्य की मूल चेतना है। उनका उपन्यास 'शेखर एक जीवनी' प्रेमचंद के गोदान के बाद सबसे महत्त्वपूर्ण उपन्यास माना जाता है। इसके अतिरिक्त उन्होंने 'नदी के द्वीप' और 'अपने अपने अजनबी' उपन्यास भी लिखे हैं। वे हिन्दी कविता में प्रयोगवादी आंदोलन के प्रवर्तक माने जाते हैं। इन्हें 'आँगन के पार द्वार' काव्यकृति पर साहित्य अकादमी ने पुरस्कृत किया। 'कितनी नावों में कितनी बार' पुस्तक पर 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' प्रदान किया गया। 'भग्नदूत', 'चिन्ता', 'इत्यलम्', 'हरी घास पर क्षण भर', 'बावरा अहेरी', 'अरी ओ करुणा प्रभामय' उनकी प्रमुख काव्यकृतियाँ हैं। उन्होंने 'तार सप्तकं' का भी संपादन किया था।

'क्रान्तिकारी शेखर का बचपन' उनके प्रसिद्ध उपन्यास 'शेखर एक जीवनी' भाग-1 का अंश है। यह उपन्यास 1940 ई. में लिखा गया था। बचपन से लेकर कॉलेज जीवन तक का जीवनविचित्र है। शेखर का जीवन दर्शन स्वातंत्र्य की खोज लक्षित हैं। वह लील पर चलनेवाला नहीं हैं।

शेखर का बचपन क्रान्तिकारी विचारों से अभिभूत था। वह ब्रिटीश शासन का जबरदस्त विरोधी और स्वदेशी चीजों का चाहक। अंग्रेजी के बजाय हिन्दी का हिमायती बचपन के उसके जीवन का कुछ अंश इस उपन्यास अंश में संकलित हैं।

असहयोग की एक लहर आयी और देश उसमें बह गया। शेखर भी उसमें बहने की चेष्टा करने लगा और जब नहीं बह पाया, तब हाथों से खेकर अपने को बहाने लगा-

उसने विदेशी कपड़े उतारकर रख दिये, जो दो-चार मोटे देशी कपड़े उसके पास थे, वही पहनने लगा। बाहर घूमने-मिलने जाना उसने छोड़ दिया, क्योंकि इतने देशी कपड़े उसके पास नहीं कि बाहर जा सके। प्राय: दुपहर को वह ऊपर की एक खिड़की के पास जाकर खड़ा हो जाता और बाहर देखा करता। कभी दूर से जब बहुत-से कण्ठों की समवेत पुकार उस तक पहुँचती:

'गांधी का बोलबाला! दुश्मन का मुँह हो काला!'

तब उसके प्राण पुलकित हो उठते और वह भी अपनी खिड़की से पुकार उठता-

'गांधी का बोलबाला! दुश्मन का मुँह हो काला!'

इससे आगे वह जा नहीं सकता था- घर से अनुमति नहीं थी लेकिन अनुमति का न होना ही तो एक अंकुश था, जो निरंतर उसे कोई मार्ग ढूँढ़ने के लिए प्रेरित किया करता था...

माँ के अतिरिक्त सब लोग बाहर गये हुए थे। माँ ऊपर कोठे पर बैठी हुई थी। शेखर ने घर के सब कमरों में से विदेशी कपड़े बटोरे और नीचे एक खुली जगह ढेर लगा दिया। फिर लैम्पे लाकर उन पर मिट्टी का तेल उँडेला (तेल का पीपा नौकरों के पास रहता था, वहाँ जाने की हिम्मत नहीं हुई), और आग लगा दी।

आग एकदम भभक उठी। शेखर का आह्लाद भी भभक उठा। वह आग के चारों ओर नाचने लगा और गला खोलकर गाने लगा:

'गांधी का बोलबाला! दुश्मन का मुँह हो काला!'

थोड़ी ही देर में माँ आयी और थोड़ी देर में शेखर के गाल भी मानों विदेशी हो गए- जलने लगे...

लेकिन ढेर राख हो गया था।

शेखर के मन में विदेशी मात्र के प्रति घृणा हो गई। उसने देखा कि हमारी नस-नस में विदेशी का प्रभुत्व ही नहीं, आतंक भरा हुआ है। उसे पुरानी बातें भी याद आयी और नयी भी। वह देखने लगा। उसे यह भी ध्यान हुआ कि पिता उसे घर में भाइयों से अंग्रेजी में बात करने को कहा करते हैं, यह भी कि वह शैशव से अंग्रेजी बोलना जानता है, पर हिन्दी अभी सीख रहा है। उसकी पहली आया ईसाई थी और अंग्रेजी ही बोलती थी, उसका पहला गुरु, जिसके साथ उसे दिन-भर बिताना होता था, एक अमरिकन मिशनरी था, जो पढ़ाता चाहे कुछ नहीं

था, दिन-भर अंग्रेजी की शिक्षा तो देता था। शेखर ने देखा कि यदि मातृभाषा वह है, जो हम सबसे पहले सीखते हैं, तब तो अंग्रेजी ही उसकी मातृभाषा है और विदेशी ही उसकी माँ... उसके आत्माभिमान को बहुत सख्त धक्का लगा... जिसे मैं घृणित समझता हूँ, उसी विदेशी को माँ कहने को बाध्य होऊँ। उसने उसी दिन से बड़ी लगन से हिन्दी पढ़ना आरंभ किया और चेष्टा से अपनी बातचीत में से अंग्रेजी शब्द निकालने लगा, अपनी आदतों में से विदेशी अभ्यासों को दूर करने लगा...

और अपने हिन्दी-ज्ञान को प्रमाणित करने के लिए, और गांधी के प्रति अपनी श्रद्धा- जिसे व्यक्त करने का और कोई साधन उसे प्राप्त नहीं था-प्रकट करने के लिए उसने एक राष्ट्रीय नाटक लिखना आरंभ किया। जीवन में देखे हुए एकमात्र खेल की स्मृति अभी ताजी थी, इसलिए उसे लिखने में विशेष कठिनाई नहीं हुई। प्रस्तावना तो ज्यों-की-त्यों हथिया ली, केवल कहीं-कहीं कुछ मामूली परिवर्तन करना पड़ा। उसके बाद नाटक आरंभ हुआ- एक स्वाधीन लोकतंत्र भारत का विराट स्वप्न, जिसके राष्ट्रपिता गांधी हैं; और सिद्धि के लिए साधन है अनवरत कताई और बुनाई, विदेशी माल और मनुष्य का परित्याग और प्रत्येक अवसर पर दूसरा गाल आगे कर देना। 'सत्य हरिश्चन्द्र' का इन्द्रलोक आरंभ से हटकर अंत में आ गया था- अपने ऊपर शेखर की प्रतिभा द्वारा सूर्यास्त के सुनहरे टापू की छाप लेकर। शेखर के नाटक का अन्तिम दृश्य था स्वाधीन और बाधाहीन भारत-एक स्थूल आकार-प्राप्त स्वप्न...

नाटक पूरा हो गया। शेखर ने सुन्दर देशी स्याही से उसकी प्रतिलिपि तैयार की और उसे अपनी पुस्तकों के नीचे छिपाकर रख दिया। पहले साहित्यिक प्रयत्नों की गति उसे अभी याद थी, इसलिए उसने अपना यह नाटक, यह अमूल्य रत्न किसी को नहीं दिखाया-सरस्वती को भी नहीं! और हर समय, जब जहाँ वह जाता, उसके मन में एक ध्वनि गूंजा करती, मैं शेखर हूँ, एक अपूर्व नाटक का लेखक चन्द्रशेखर! और मैंने अकेले ही, बिना किसी की सहायता के अपने हाथों से उसका निर्माण किया है, स्वाधीन बाधाहीन भारत के उस चित्र का, मैंने!

शेखर के पिता एक दिन के दौरे पर जा रहे थे और शेखर साथ था। बाँकीपुर स्टेशन पर सामान रखकर, पिता और पुत्र वेटिंग-रूम के बाहर टहल रहे थे-शेखर कुछ आगे, पिता पीछे-पीछे।

पास से एक लड़का आया और शेखर की ओर उन्मुख होकर अंग्रेजी में बोला, 'तुम्हारा नाम क्या है?'

शेखर ने सिर से पैर तक उसे देखा। लड़का एक अच्छा-सा सूट पहने था, सिर पर अंग्रेजी टोपी और उसके स्वर में अहंकार था, शायद वह अपने अंग्रेजी-ज्ञान का परिचय देना चाहता था।

शेखर को प्रश्न बुरा और अपमानजनक लगा। उसने उत्तर नहीं दिया। कुछ इसलिए भी नहीं दिया कि पीछे पिता थे और पिता की उपस्थिति में बात करते वह झिझकता था।

उस लड़के ने समझा, उसका सामना करनेवाला कोई नहीं है- यह लड़का शायद अंग्रेजी जानता ही नहीं। उसने तनिक और रोब में कहा, "My name is- Do you go to school?" (मेरा नाम है- तुम स्कूल में पढ़ते हो?')

शेखर के पिता वहाँ न होते तो वह प्रश्न का उत्तर चाहे न देता पर (हिन्दी में) कुछ उत्तर अवश्य देता। उसके मन में यह सन्देह उठ भी रहा था कि वह लड़का शायद कोई पाठ ही दुहरा रहा है, अंग्रेजी उतनी जानता नहीं। पर उसने घृणा से उस लड़के की ओर देखा, उत्तर कोई नहीं दिया।

पिता के क्रुद्ध स्वर ने कहा-शायद उस लड़के को जताने के लिए कि मेरा लड़का अंग्रेजी जानता है- 'जवाब क्यों नहीं देते!'

शेखर और भी चिढ़ गया और भी चुप हो गया। वह लड़का मुस्कराकर आगे बढ़ गया। पिता ने कहा, 'इधर आओ।' शेखर उनके पीछे-पीछे वेटिंग-रूम में गया तो पिता ने उसका कान पकड़कर पूछा, ''जवाब क्यों नहीं दिया? मुँह टूट गया है?''

तभी ट्रेन आ गयी और शेखर कुछ उत्तर देने से-या उत्तर न देने की गुस्ताखी करने से बच गया।

दूसरे दिन, घर पर पिता ने माँ से कहा, 'हमारे लड़के सब बुद्धु है। किसी के सामने तो बोल नहीं निकलता।'

शेखर ने सुन लिया।

('शेखर : एक जीवनी उपन्यास : पहला भाग')

शब्दार्थ और टिप्पणी

शैशव बचपन **बोलबाला** अति प्रसिद्ध **अनुमति** सहमति **अंकुश** नियंत्रण **परित्याग** बहिष्कार

मुहावरे

मुँह काला होना बेइज्जती होना **घृणा** नफरत **बाध्य** विवश

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए :

(1) शेखर ने बाहर घूमने-मिलने जाना क्यों छोड़ दिया?

(2) शेखर के मस्तिष्क में कैसी पुकार पहुँचती थी?

(3) शेखरने आग कैसे जलाई?

(4) शेखर गला खोलकर क्या गाने लगा?

(5) अंग्रेजी बालक ने जवाब में क्या कहा?

2. दो-तीन वाक्य में उत्तर दीजिए :

(1) घर के सदस्य बाहर गए तब शेखर ने क्या किया?

(2) शेखर के नाटक का विषय क्या था?

(3) अंग्रेजी बालक के प्रश्न का उत्तर शेखर ने क्यों नहीं दिया?

(4) पिता ने क्रुद्ध स्वर में शेखर को क्या कहा?

(5) शेखर उत्तर न देने में कैसे बच गया?

(6) घर आकर पिता ने माँ से क्या कहा? क्यों?

3. सविस्तार उत्तर लिखिए :

(1) शेखर के मन में विदेशी मात्र के प्रति घृणा क्यों हो गई थी?

(2) शेखर के घर में अंग्रेजी भाषा के प्रति गहरा प्रभाव था-ऐसा हम कैसे कह सकते हैं?

(3) शेखर का चरित्र-चित्रण कीजिए।

(4) शेखर ने नाटक लिखना कब आरंभ किया? क्यों?

4. विलोम शब्द लिखिए :

सहयोग, विदेशी, बाहर, दुश्मन, अंकुश

5. समानार्थी शब्द लिखिए :

अनुमति, कष्ट, निरंतर, आज़ाद

6. मुहावरें का अर्थ देकर वाक्य में प्रयोग कीजिए:

(1) मुँह काला होना

योग्यता-विस्तार

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- अन्य क्रांतिकारियों में से किन्हीं दो क्रांतिकारियों की जानकारी प्राप्त कीजिए और कक्षा में प्रस्तुत कीजिए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- हिन्दी दिवस अंतर्गत विविध प्रवृत्तियों का आयोजन कीजिए और राष्ट्रभाषा का महत्त्व बढ़ाइए।

●

स्वर संधि

परिभाषा :

- ''दो वर्णों के मेल से उत्पन्न विकार को 'संधि' कहते हैं।'' संधि का शाब्दिक अर्थ है-मेल या समझौता। जब दो वर्णों का मिलन अत्यन्त निकटता के कारण होता है तब उनमें कोई-न-कोई परिवर्तन होता है और वही परिवर्तन संधि के नाम से जाना जाता है।

जैसे : हिम + आलय

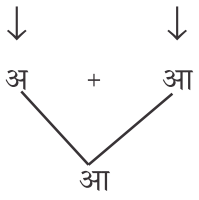

(यहाँ 'अ', एवं 'आ' अत्यन्त निकट हैं)

('अ' एवं 'आ' के मिलने से विकार हुआ)

- हिम् (म् से 'अ' निकाल ने पर)
- 'आलय' से 'आ' निकाल ने पर 'लय' बचा
- हिम् + (अ + आ) + लय

- हिम् आ लय ('म्' के साथ 'आ' का संयोग होने पर 'हिमा' बना)
- अब 'हिमा' और 'लय' दोनों को मिला देने पर 'हिमालय' बना।
- अत: हिम + आलय = हिमालय

संधि के भेद :

- संधि के तीन भेद हैं-

1. स्वर संधि 2. व्यंजन संधि और 3. विसर्ग संधि

यहाँ हम 'स्वर संधि के बारे में अभ्यास करेंगे।

स्वर संधि :

- ''स्वर वर्ण के साथ स्वर वर्ण के मेल से जो विकार उत्पन्न होता है, उसे 'स्वर संधि' कहते हैं।''

जैसे : - अभि + इष्ट = अभीष्ट

- इ + इ = ई (यहाँ 'इ' और 'इ' दो स्वरों के बीच संधि होकर 'ई' रूप हुआ)

- स्वर संधि के पाँच प्रकार हैं-

1. दीर्घ स्वर संधि
2. गुण स्वर संधि
3. वृद्धि स्वर संधि
4. यण स्वर संधि
5. ययादी स्वर संधि

प्रथम तीन प्रकारों के बारे में समझेंगे।

(1) **दीर्घ स्वर संधि :**

निम्नलिखित उदाहरणों को ध्यान से पढ़िए।

अ + अ = आ अन्न (अ) + अभाव (अ) = अन्नाभाव (आ)
अन्य (अ) + अन्य (अ) = अन्यान्य (आ)

अ + आ = आ परम (अ) + आत्मा (आ) = परमात्मा (आ)
असुर (अ) + आलय (आ) = असुरालय (आ)

आ + अ = आ	आशा (आ) + अतीत (अ) = आशातीत (आ)
	जिह्वा (आ) + अग्र (अ) = जिह्वाग्र (आ)
आ + आ = आ	कृपा (आ) + आचार्य (आ) = कृपाचार्य (आ)
	दया (आ) + आनंद (आ) = दयानंद (आ)
इ + इ = ई	कवि (इ) + इन्द्र (इ) = कवीन्द्र (ई)
	अति (इ) + इव (इ) = अतीव (ई)
इ + ई = ई	कपि (इ) + ईश (ई) = कपीश (ई)
	कवि (इ) + ईश (ई) = कवीश (ई)
ई + इ = ई	फणी (ई) + इन्द्र (इ) = फणीन्द्र (ई)
	मही (ई) + इन्द्र (इ) = महीन्द्र (ई)
ई + ई = ई	पृथ्वी (ई) + ईश (ई) = पृथ्वीश (ई)
	जानकी (ई) + ईश (ई) = जानकीश (ई)
उ + उ = ऊ	गुरु (उ) + उपदेश (उ) = गुरुपदेश (ऊ)
उ + ऊ = ऊ	लघु (उ) + ऊर्मि (ऊ) = लघूर्मि (ऊ)
ऊ + उ = ऊ	वधू (ऊ) + उत्सव (उ) = वधूत्सव (ऊ)
ऊ + ऊ = ऊ	भू (ऊ) + ऊर्ध्व (ऊ) = भूर्ध्व (ऊ)

उपर्युक्त उदाहरणों के आधार निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(1) संधि कीजिए।

- कंस + अरि = कंसारि
- एक + आनन = ...
- गिरि + इन्द्र = ...
- पारि + ईक्षा = ...
- नाडी + ईश्वर = ...

(2) संधि विच्छेद कीजिए।

- कल्पान्त = कल्प + अन्त
- भाषान्तर = ...
- विद्यालय = ...
- मुनीश = ...
- कृष्णानंद = ...
- रवीन्द्र = ...
- रजनीश = ...

(3) गुण स्वर संधि :

निम्नलिखित उदाहरणों को ध्यान से पढ़िए।

- **अ / आ + इ / ई = ए**

  जैसे : - देव (अ) + इन्द्र (इ) = देवेन्द्र (ए)

  - उदाहरण में 'व' से 'ए' का संयोग होने पर देवेन्द्र और दोनों खंड़ों को मिलाने पर 'देवेन्द्र' बना।
  - **अन्य उदाहरण :**

    सुर (अ) + इन्द्र (इ) = सुरेन्द्र

    ईश्वर (अ) + इच्छा (इ) = ईश्वरेच्छा

    जित (अ) + इन्द्रिय (इ) = जितेन्द्रिय

    उप (अ) + ईक्षा (ई) = उपेक्षा

    तप (अ) + ईश्वर (ई) = तपेश्वर

लोक (अ) + ईश (ई) = लोकेश
उमा (आ) + ईश (ई) = उर्मिलेश
लंका (आ) + ईश्वर (ई) = लंकेश्वर
महा (आ) + इन्द्र (इ) = महेन्द्र
यथा (आ) + इष्ट (इ) = यथेष्ट

- **अ / आ + उ / ऊ = ओ**

जैसे : - वीर (अ) + उचित (उ) = वीरोचित (ओ)

- उदाहरण में 'र्' से 'ओ' का संयोग होने पर वीर् ओ चित सभी खंड़ों को मिलाने पर 'वीरोचित' बना।
- **अन्य उदाहरण :**

आत्म (अ) + उत्सर्ग (उ) = आत्मोत्सर्ग (ओ)
लोक (अ) + उक्ति (उ) = लोकोक्ति (ओ)
अक्ष (अ) + ऊहिणी (ऊ) = अक्षौहिणी (ओ)
गंगा (आ) + उदक (उ) = गंगोदक (ओ)
विद्या (आ) + उपार्जन (उ) = विद्योपार्जन (ओ)
गंगा (आ) + ऊर्मि (ऊ) = गंगोर्मि (ओ)

- **अ / आ + ऋ = अर्**

जैसे : - महा (आ) + ऋषि (ऋ) = महर्षि (अर्)

- 'मह्' के 'ह' से 'अ' का संयोग होने से - महषि 'र्' का रेफ हो जाने पर 'र्षि'
- 'मह' और 'र्षि' को मिलाने पर 'महर्षि' बना।
- **ध्यातव्य :** जब दो सस्वर व्यंजनों के बीच 'र्' रहे तो वह अगले व्यंजन पर रेफ बन जाता है। उपर्युक्त उदाहरण में 'ह' और 'षि' के बीच 'र्' है जो 'षि' पर रेफ बन चुका है।
- **अन्य उदाहरण :**

देव (अ) + ऋषि (ऋ) = देवर्षि (अर्)
ब्रह्म (अ) + ऋषि (ऋ) = ब्रह्मर्षि (अर्)
राजा (आ) + ऋषि (ऋ) = राजर्षि (अर्)

उपर्युक्त उदाहरणों के आधार निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

(1) संधि कीजिए।

- भुजग + इन्द्र = भुजगेन्द्र
- नर + इन्द्र = ...
- फल + इच्छा = ...
- कमल + ईश = ...
- प्राण + ईश्वर = ...
- उमा + ईश = ...
- महा + ईश = ...
- रमा + इन्द्र = ...
- सप्त + ऋषि = ...
- अर्थ + उपार्जन = अर्थोपार्जन
- ग्राम + उद्धार = ...
- नव + उदय = ...
- पर + उपकार = ...
- नव + ऊढा = ...
- लंबा + उदर = ...
- महा + उदय = ...
- धारा + उष्ण = ...
- महा + ऋषि = ...
- सम् + कृति = ...

(2) संधि विच्छेद कीजिए।

- कर्णोद्धार = कर्ण + उद्धार
- जनमोत्सव = ...
- नीलोत्पल = ...
- धीरोदात्त = ...
- चिन्तोन्मुक्त = ...
- महोपदेश = ...
- ध्वजोत्तोलन = ...
- विवेकानंद = ...
- देवेन्द्र = देव + इन्द्र
- विजयेच्छा = ...
- गणेश = ...
- भूतेश = ...
- परमेश्वर = ...
- गंगेश = ...
- थानेश्वर = ...
- विद्योत्तमा = ...
- संगीत = ...

(3) वृद्धिस्वर संधि :

निम्नलिखित उदाहरणों को ध्यान से पढ़िए।

- **अ / आ + ए / ऐ = ऐ**

  जैसे : - एक (अ) + एक (ए) = एकैक

  - 'एक्' के 'क्' से 'ऐ' का संयोग होने से - ए कै क = एकैक
  - **अन्य उदाहरण :**

    सदा (आ) + एव (ए) = सदैव (ऐ)

    तथा (आ) + एव (ए) = तथैव (ऐ)

    टिक (अ) + ऐत (ऐ) = टिकैत (ऐ)

    गंगा (आ) + ऐश्वर्य (ऐ) = गंगैश्वर्य (ऐ)

- **अ / आ + ओ / औ = औ**

  जैसे : - जल (अ) + ओघ (ओ) = जलौघ

  - 'जल्' के 'ल्' से 'औ' का संयोग होने से - जल् औ घ = जलौघ बना
  - **अन्य उदाहरण :**

    परम (अ) + ओषधि (ओ) = परमौषधि (औ)

    बिम्ब (अ) + ओष्ठ (ओ) = बिम्बौष्ठ (औ)

    गृह (अ) + औत्सुक्य (औ) = गृहौत्सुक्य (औ)

    गंगा (आ) + ओघ (ओ) = गंगौघ (औ)

    महा (आ) + औषध (औ) = महौषध (औ)

उपर्युक्त उदाहरणों के आधार अधोलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. संधि कीजिए ।

   वन + औषधि = ...

   परम + औदार्य = ...

2. संधि विच्छेद कीजिए ।

   शुद्धोदन = ...

   महौषध = ...

(4) यण् स्वर संधि :

- यदि इ/ई, उ/ऊ और ऋ के बाद भिन्न स्वर आए तो इ/ई का 'य', उ/ऊ का 'व' और ऋ का 'र' हो जाता है। इसके संदर्भ में निम्नलिखित उदाहरणों को ध्यान से पढ़िए।
- **इ / ई + भिन्न स्वर :**

जैसे : - इ / ई

↓

य् (यह भिन्न स्वर से मिल जाता है)

जैसे : प्रति + एक = प्रत्येक

↓ ↓

इ ए ('इ' से भिन्न स्वर है)

↓ ↓

य् ये (भिन्न स्वर से मिलने पर)

- अगला रूप, प्रत् ये क
- सभी खंड़ों को मिलाने पर प्रत्येक बना।

अन्य उदाहरण:

आदि (इ) + अन्त (अ) = आद्यन्त (य)

प्रति (इ) + अक्ष (अ) = प्रत्यक्ष (य)

वि (इ) + अर्थ (अ) = व्यर्थ (य)

अति (इ) + आचार (आ) = अत्याचार (या)

वि (इ) + आकुल (आ) = व्याकुल (या)

अति (इ) + उत्तम (उ) = अत्युत्तम (यु)

वि (इ) + उत्पत्ति (उ) = व्युत्पत्ति (यु)

दधि (इ) + ओदन (ओ) = दध्योदन (यो)

देवी (ई) + आगम (आ) = देव्यागम (दा)

नि (इ) + ऊन (ऊ) = न्यून (यू)

उ/ऊ + भिन्न स्वर के उदाहरण:

अनु (उ) + एषण (ए) = अन्वेषण (वे)

अनु (उ) + ईक्षण (ई) = अन्वीक्षण (वी)

अनु (उ) + अय (अ) = अन्वय (व)

पशु (उ) + आदि (आ) = पश्वादि (वा)

लघु (उ) + आहार (आ) = लघ्वाहार (वा)

ऊह (ऊ) + अपोह (अ) = ऊहापोह (आ)

वधू (ऊ) + ऐश्वर्य (ऐ) = वध्वैश्र्य (वै)

वध (ऊ) + आगमन (आ) = वध्वागमन (वा)

ऋ + भिन्न स्वर के उदाहरण:

पितृ (ऋ) + आदेश (आ) = पित्रादेश (रा)

मातृ (ऋ) + आनन्द (आ) = मात्रानन्द (रा)

उपर्युक्त उदाहरणों के आधार निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

संधि कीजिए।

- अति + अन्त = ...
- इति + आदि = ...
- वि + आधि = ...
- अभि + उदय = ...
- गौरी + आदेश = ...
- पशु + अधम = ...
- मधु + आचार्य = ...
- वधू + आगमन = ...

संधि विच्छेद कीजिए।

- अत्यधिक = ...
- यद्यपि = ...
- गत्यात्मकता = ...
- सख्यागमन = ...
- व्याधात = ...
- उपर्युक्त = ...
- व्यूह = ...
- सरयागमन = ...
- स्वल्प = ...
- मध्वासव = ...

(5) अयादि स्वर संधि :

- यदि ए, ऐ, ओ और औ के बाद भिन्न स्वर आए तो 'ए' का अय् 'ऐ' का आय् 'ओ' का अव् और 'औ' का आव् हो जाता है । इसके संदर्भ में यह याद रखिए कि अय्, आय् और आव् के य् और व् आगेवाले भिन्न स्वर से मिल जाते हैं।

निम्नलिखित उदाहरणों को ध्यान से पढ़िए

- **उदाहरण :**

जैसे :

नै	+	अक	
↓		↓	
ऐ		अ	(भिन्न स्वर)
↓		↓	
आय्		य	(न् + आ = ना) शब्द बनेगा = नायक

- **अन्य उदाहरण :**

  चे (ए) + अन (अ) = चयन (अय)
  नै (ऐ) + अक (अ) = नायक (आय)
  पो (ओ) + अन (अ) = पवन (अव)
  गै (ऐ) + इका (इ) = गायिका (आयि)
  पो (ओ) + इत्र (इ) = पवित्र (अयि)
  भौ (औ) + उक (उक) = भावुक (आवु)
  धौ (औ) + अक (अ) = धावक (आव)
  पौ (औ) + अक (अ) = पावक (आव)

उपर्युक्त उदाहरणों के आधार निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(1) संधि कीजिए।

- ने + अन = ...
- गै + अन = ...
- श्रो + अन = ...
- शै + अन = ...

(2) संधि विच्छेद कीजिए।

- नायिका = ...
- शावक = ...
- श्रावण = ...

●

22 वीरों का कैसा हो वसन्त

सुभद्राकुमारी चौहान

(जन्म : सन् 1904 ई. : निधन : सन् 1948 ई.)

सुभद्राकुमारी चौहान का जन्म प्रयाग में ठाकुर रामनाथ के घर हुआ था। कास्थवेट गर्ल्स कॉलेज में आपने शिक्षा प्राप्त की। आपका विवाह खण्डवा निवासी ला. लक्ष्मणसिंह चौहान के साथ संपन्न हुआ। सुभद्राकुमारी चौहान ने कांग्रेस के असहयोग आंदोलन में भाग लेने के लिए अपना अध्ययन छोड़ दिया और पति को भी देश-सेवा में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। सन् 1947 ई. की 15 फरवरी को जबलपुर के समीप एक मोटर दुर्घटना में उनका देहान्त हो गया। सुभद्राकुमारी चौहान न केवल स्वतंत्रता सेनानी रही वरन् उन्होंने साहित्य-सृजन भी विपुल मात्रा में की। 'मुकुल' व 'त्रिधारा' इनके काव्य-संग्रह हैं। बिखरे मोती, उन्मादिनी, सीधे-साधे चित्र, कहानी-संग्रह हैं। बिखरे मोती नामक पुस्तक पर उन्हें सकसेरिया पुरस्कार प्रदान किया गया था। सुभद्राकुमारी चौहान की भाषा-शैली सरल और सुबोध हैं।

प्रस्तुत कविता वीरों की शूरवीरता को प्रोत्साहित करती हुई उत्तम काव्यरचना है। पूर्व-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण चारों दिशाएँ पुकार रही है। पर्वत-हल्दी-घाटी सिंह-गढ़ भी तैनात हो गए हैं तो वीरों का कैसा हो वसन्त कहकर कवयित्रीने शूरवीरों का उत्साह बढ़ाया है।

वीरों का कैसा हो वसन्त?
आ रही हिमाचल से पुकार,
है उदधि गरजता बार-बार,
प्राची, पश्चिम, भू, नभ अपार,
सब पूछ रहे हैं दिग्-दिगन्त,
वीरों का कैसा हो वसन्त?
फूली सरसों ने दिया रंग,
मधु लेकर आ पहुंचा अनंग,
बधु-वसुधा पुलकित अंग-अंग,
हैं वीर वेष में किन्तु कन्त,
वीरों का कैसा हो वसन्त?
भर रही कोकिला इधर तान,
मारु बाजे पर उधर गान,
है रंग और रण का विधान,
मिलने आए हैं आदि-अन्त,
वीरों का कैसा हो वसन्त?
कह दे अतीत अब मौन त्याग?
लंके! तुझ में क्यों लगी आग,
ए कुरुक्षेत्र! अब जाग, जाग,
बतला अपने अनुभव अनन्त,
वीरों का कैसा हो वसन्त?
हल्दी-घाटी के शिला-खण्ड,
ए दुर्ग सिंह-गढ़ के प्रचण्ड,
राणा-ताना का कर घमण्ड,
दो जगा आज स्मृतियाँ ज्वलंत,
वीरों का कैसा हो वसन्त?
भूषण अथवा कवि चन्द नहीं;
बिजली भर दे वह छन्द नहीं,
है कलम बँधी स्वछन्द नहीं,
फिर हमें बतावें कौन? हन्त!
वीरों का कैसा हो वसन्त?

शब्दार्थ और टिप्पणी

उदधि समुद्र **प्राची** पूर्व दिशा **नभ** आकाश **दिग् दिगन्त**, अनन्त **मधु** भँवरा **वसुधा** पृथ्वी **कन्त** स्वामी **मारु** एस वाद्य यंत्र **अतीत** भूतकाल **घमण्ड** अभिमान

स्वाध्याय

1. एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए :

(1) बार-बार कौन गरजता है ?

(2) प्रकृति के तत्त्व क्या पूछ रहे हैं ?

(3) बधु-वसुधा में क्या परिवर्तन आया ?

(4) कवयित्री कुरुक्षेत्र से क्या कहते हैं ?

(5) कवयित्री की कलम की क्या विशेषता है ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) वीरों का कैसा है वसन्त ? ऐसा कौन-कौन पूछ रहे है ?

(2) 'कह दे अतीत अब मौन त्याग' ऐसा कवयित्रीने क्यों कहा है ?

(3) किन ऐतिहासिक घटनाओं के आधार पर कवयित्रीने 'वीरों का वसन्त' बताया है ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए :

(1) ''वीरों का कैसा है वसन्त-'' इस पंक्ति को अपने शब्दों में कविता के आधार पर समझाइए।

(2) हल्दी-घाटी और सिंह-गढ़ से कवि का क्या तात्पर्य है ?

(3) ''है कलम बँधी स्वच्छन्द नहीं''- ससंदर्भ समजाइए।

योग्यता-विस्तार

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- शहीदों की सूची एवं उनके कार्यों का संकलन कीजिए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- शहीदों पर लिखी हुई कविताओं का संकलन करवाइए।
- शहीदों के स्मारकों की मुलाकात करवाइए।
- देशभक्ति के गीतों का संकलन करें।

●

23 जब मैंने पहली पुस्तक खरीदी

धर्मवीर भारती

(जन्म : सन् 1926 ई. : निधन : सन् 1997 ई.)

धर्मवीर भारती का जन्म 25 दिसम्बर, 1926 ई. को इलाहाबाद में हुआ था। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से उन्हों ने एम.ए., पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। वहाँ हिन्दी विभाग के प्राध्यापक नियुक्त हुए। सन् 1960 से 1988 तक 'धर्मयुग' जैसे प्रतिष्ठित साप्ताहिक का सम्पादन कार्य किया। उन्होंने देश-विदेश की यात्राएँ भी की थी। भारत सरकार ने उन्हें पद्मश्री से सन्मानित किया था और साहित्य सेवा के लिए 'व्यास सम्मान' से अलंकृत किया गया था।

धर्मवीर भारती नयी कविता के श्रेष्ठ कवि, उपन्यासकार, कहानीकार और निबंधकार थे। 'अंधायुग', 'कनुप्रिया', 'सातगीत वर्ष', 'ठंडा लोहा' उनके काव्य-संग्रह है। काव्य-नाटक अंधायुग उनकी सर्वश्रेष्ठ रचना हैं। 'गुनाहों के देवता', 'सूरज का साँतवाँ घोड़ा' तथा 'ग्यारह स्वप्नों का देश' उनके प्रमुख उपन्यास हैं। 'गुल की बन्नो', 'बन्द गली का आखिरी मकान' आदि कहानियों का हिन्दी की नयी कहानी में विशिष्ट स्थान हैं। 'ठेले पर हिमालय' और 'पश्यंती' उनके निबंध-संग्रह हैं।

प्रस्तुत संस्मरण द्वारा धर्मवीर भारतीजी ने अपने बचपन के दिनों की बातों को हमारे सामने रखा है। उनका बचपन गरीबी में बीता था। लेकिन उनको पढ़ने का बड़ा शौक था। स्कूल में से इनाम में दो किताबें मिली तो पिताजी ने अपनी अलमारी में जगह देकर लेखक की अपनी लाइब्रेरी बना दी। वहाँ से लेखक को किताबें इकट्ठी करने की धुन सवार हो गई। माँ ने पिक्चर देखने के लिए दो रुपये दिये थे लेकिन, लेखक का मन पलट जाता हैं और वे पुस्तक की दुकान में से दस आने की 'देवदास' नाम की पुस्तक खरीदतें हैं। लेखक ने अपने पैसों से खरीदी हुई वह पहली किताब थी। इस पाठ में लेखक ने जीवन में पुस्तकों के महत्त्व पर प्रकाश डाला है।

बचपन की बात है। उस समय आर्यसमाज का सुधारवादी आन्दोलन पूरे जोर पर था। मेरे पिता आर्यसमाज रानीमंडी के प्रधान थे और माँ ने स्त्री शिक्षा के लिए आदर्श कन्या पाठशाला की स्थापना की थी।

पिता की अच्छी-खासी सरकारी नौकरी थी, बर्मा रोड जब बन रही थी तब बहुत कमाया था उन्होंने। लेकिन मेरे जन्म के पहले ही गाँधीजी के आह्वान पर उन्होंने सरकारी नौकरी छोड़ दी थी। हम लोग बड़े आर्थिक कष्टों से गुजर रहे थे फिर भी घर में नियमित पत्र-पत्रिकाएँ आती थीं- 'आर्यमित्र', 'साप्ताहिक', 'वेदोदय', 'सरस्वती', 'गृहणी' और दो बाल पत्रिकाएँ खास मेरे लिए 'बालसखा' और 'चमचम'। उनमें होती थी परियों, राजकुमारों, दानवों और सुन्दर राजकन्याओं की कहानियाँ और रेखाचित्र। मुझे पढ़ने की चाह लग गयी। हर समय पढ़ता रहता। खाना खाते समय थाली के पास पत्रिकाएँ रखकर पढ़ता। अपनी दोनों पत्रिकाओं के अलावा भी 'सरस्वती' और 'आर्यमित्र' पढ़ने की कोशिश करता। घर में पुस्तकें भी थीं। उपनिषदें और उनके हिन्दी अनुवाद - सत्यार्थ प्रकाश। 'सत्यार्थ प्रकाश' के खंडन-मंडन वाले अध्याय पूरी तरह समझ में नहीं आता था पर पढ़ने में मजा आता था।

मेरी प्रिय पुस्तक थी स्वामी दयानन्द की एक जीवनी, रोचक शैली में लिखी हुई, अनेक चित्रों से सुसज्जित। वे तत्कालीन पाखंडों के विरुद्ध अदम्य साहस दिखाने वाले अद्‌भुत व्यक्तित्व थे। कितनी ही रोमांचक घटनाएँ थीं उनके जीवन की जो मुझे बहुत प्रभावित करती थी। चूहे को भगवान का मीठा खाते देख कर मान लेना कि प्रतिमाएँ भगवान नहीं होती, घर छोड़कर भाग जाना। तमाम तीर्थों, जंगलों, गुफाओं, हिमशिखरों पर साधुओं के बीच घूमना और हर जगह इसकी तलाश करना कि भगवान क्या है? सत्य क्या है? जो भी समाज विरोधी, मनुष्य विरोधी मूल्य हैं, रूढ़ियाँ हैं उनका खंडन करना और अन्त में अपने हत्यारे को क्षमा कर उसे सहारा देना। यह सब मेरे बालमन को बहुत रोमांचित करता।

माँ स्कूली पढ़ाई पर जोर देती। चिन्तित रहती कि लड़का कक्षा की किताबें नहीं पढ़ता। पास कैसे होगा? कहीं खुद साधु बनकर फिर से भाग गया तो? पिता कहते जीवन में यही पढ़ाई काम आयेगी पढ़ने दो। मैं स्कूल नहीं भेजा गया था, शुरू की पढ़ाई के लिए घर पर मास्टर रक्खे गये थे। पिता नहीं चाहते थे कि नासमझ उम्र में मैं गलत संगति में पड़ कर गाली-गलौज सीखूँ, बुरे संस्कार ग्रहण करूँ। अत: स्कूल में मेरा नाम लिखाया गया, जब मैं कक्षा दो तक की पढ़ाई घर पर कर चुका था। तीसरे दर्जे में भर्ती हुआ। उस दिन शाम को पिता उँगली पकड़ कर मुझे घुमाने ले गये। लोकनाथ की एक दुकान से ताजा अनार का शर्बत मिट्‌टी के कुल्हड़ में पिलाया और सर पर हाथ रख कर बोले - 'वायदा करो कि पाठ्यक्रम की किताबें भी इतने ही ध्यान से पढ़ोगे, माँ की

चिन्ता मिटाओगे। 'उनका आशीर्वाद था या मेरा जी तोड़ परिश्रम कि तीसरे चौथे में मेरे अच्छे नम्बर आये और पाँचवें दर्जे में तो मैं फर्स्ट आया।' माँ ने आँसू भर कर गले लगा लिया, पिता मुस्कुराते रहे, कुछ बोले नहीं।

अंग्रेजी में मेरे नम्बर सबसे ज्यादा थे, अत: स्कूल से इनाम में दो अंग्रेजी किताबें मिली थीं। एक में दो छोटे बच्चे घोंसलों की खोज में बागों और कुंजों में भटकते हैं और इस बहाने पक्षियों की जातियाँ, उनकी बोलियाँ, उनकी आदतों की जानकारी उन्हें मिलती हो। दूसरी किताब थी 'ट्रस्टी द रग' जिसमें पानी की कथाएँ थीं, कितने प्रकार के होते हैं। कौन-कौन सा माल लाद कर लाते हैं, कहाँ ले जाते हैं, नाविकों की ज़िन्दगी, कैसी होती है, कैसे-कैसे जीव मिलते हैं, कहाँ व्हेल होती है, कहाँ शार्क होती है।

इन दो किताबों ने एक नई दुनिया का द्वार मेरे लिए खोल दिया। पक्षियों से मेरा आकाश और रहस्यों से भरा समुद्र। पिता ने अलमारी के एक खाने में अपनी चीजें हटाकर जगह बनायी और मेरी दोनों किताबें उस खाने में रख कर कहा, 'आज से यह खाना तुम्हारी अपनी किताबों का। यह तुम्हारी लाइब्रेरी है।' यहाँ से आरम्भ हुई उस बच्चे की लाइब्रेरी। आप पूछ सकते हैं कि किताबें पढ़ने का शौक तो ठीक, किताबें इकट्ठी करने की सनक क्यों सवार हुई, उसका कारण भी बचपन का एक अनुभव है।

इलाहाबाद भारत के प्रख्यात शिक्षा केन्द्रों में एक रहा है। ईस्ट इंडिया कम्पनी द्वारा स्थापित पब्लिक लाइब्रेरी से लेकर महामना मदनमोहन मालवीय द्वारा स्थापित भारती भवन तक। अपने मुहल्ले में एक लाइब्रेरी थी हरि भवन। स्कूल से छुट्टी मिली कि मैं उसमें जाकर अध्ययन करता ।

शब्दार्थ और टिप्पणी

आह्वान बुलावा **अदम्य** जो दबाया न जा सके, प्रबल **रोमांचित** पुलकित, जिसके रोयें खडे हों **टोल्सटाय** रुसी कथाकार **विक्टर ह्यूगो** फ्रांसिसी कथाकार **मैक्सिम गोर्की** एक रुसी कथाकार **ईश्यू कराना** निर्गत कराना **कोशिश** प्रयत्न **रोचक** रुचि अनुसार **जीवनी** जीवनचरित्र **खंडन** विभाजन **संगति** संगत, मेल **कुल्हड़** मिट्टी का बरतन **अक्सर** खास करके **सहमति** अनुमोदन

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(1) माँ की स्कूली पढ़ाई पर जोर देने से लेखक की पढ़ाई पर क्या असर हुआ?

(2) लेखक की प्रिय पुस्तक कौन-सी थी? वे किन बातों से सम्बन्धित थी?

(3) माँ के दिये हुए रुपयों का लेखक ने क्या किया? क्यों?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-दो वाक्यों में लिखिए :

(1) बचपन में लेखक के घर में कौन-कौन सी पत्रिकाएँ आती थी?

(2) बचपन में लेखक को स्वामी दयानन्दजी की जीवनी क्यों पसंद थी?

(3) लेखक को अंग्रेजी में सबसे अधिक अंक पाने के बाद उपहार में कौन सी दो पुस्तकें मिली थी और उनसे लेखक को क्या जानकारी प्राप्त हुई?

(4) लेखक की माँ ने लेखक को कितने रुपये दिये? क्यों?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

(1) लेखक को बचपन से क्या शौक था?

(2) लेखक के पिता कहाँ के प्रधान थे?

(3) लेखक की प्रिय पुस्तक कौन सी थी?

(4) लेखक कौन-सी फिल्म देखने गये?

(5) लेखक की माँ की आँखों में आँसू क्यों आ गए?

4. निम्नलिखित शब्दों के हिन्दी शब्द लिखिए :

(1) लाइब्रेरी (2) थियेटर

(3) पिक्चर (4) इंडिया

(5) लाइब्रेरियन

5. निम्नलिखित शब्दों के विरुद्धार्थी शब्द लिखिए :

(1) आरम्भ ×

(2) आनंद ×

(3) जीवन ×

(4) छोटा ×

(5) दु:ख ×

6. निम्नलिखित वाक्यों में से साधारण, संयुक्त तथा मिश्रित वाक्यों को पहचान कर नाम लिखिए :

(1) मेरे पिता आर्य-समाज रानी मंडी के प्रधान थे और माँ ने स्त्री शिक्षा के लिए आदर्श कन्या पाठशाला की स्थापना की थी।

(2) माँ स्कूली पढ़ाई पर जोर देती थी।

(3) जल्दी-जल्दी घर लौट आया और दो रुपये में से एक रुपये छह आना माँ के हाथ में रख दिया।

(4) उनका आशीर्वाद था या मेरा जी-तोड़ परिश्रम के तीसरे चोथे में मेरे अच्छे नम्बर आये और पाँचवें दर्जे में तो मैं फर्स्ट आया।

(5) उस साल इण्टरमीडिएट पास किया था।

7. संधि विग्रह कीजिए :

(1) वीरोचित (2) रमेश

(3) देवोचित (4) सुरेश

योग्यता-विस्तार

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- अपने स्कूल की लाइब्रेरी में जाकर अपनी पसंदीदा पुस्तकों की सूचि बनाइए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- 'मेरी प्रिय पुस्तक' विषय पर निबंध लेखन करवाइए।
- विश्व का सबसे बड़ा पुस्तकालय 'नेशनल लाइब्रेरी' की कक्षा में विद्यार्थिओं की जानकारी दे।

●

समास

'समास' (Compounds) का शाब्दिक अर्थ है- संक्षेप या संक्षिप्त करने की रचना विधि। निम्नलिखित वाक्यों को देखिए-

- राजा का कुमार सख्त बीमार था।
- राजकुमार सख्त बीमार था।

उपर्युक्त वाक्यों में हम देख रहे हैं कि 'राजा का कुमार' का संक्षिप्त रूप 'राजकुमार' हो गया है। अर्थात् दो या अधिक शब्दों का अपने विभक्ति-चिह्नों अथवा अन्य प्रत्ययों को छोड़कर आपस में मिल जाना ही 'समास' कहलाता है।

तात्पर्य यह कि समास में कम-से-कम दो पदों का योग होता है। जब वे दो या अनेक पद एक हो जाते हैं तब समास होता है।

समास होने के पूर्व पदों के रूप को (बिखरे रूप) 'समास-विग्रह' और समास होने के बाद बने संक्षिप्त रूप को 'समस्त पद' या 'सामासिक पद' कहते हैं। ऊपर दिए गए उदाहरणों में 'राजा का कुमार'- समास विग्रह और 'राजकुमार' को हम 'समस्त पद' कहेंगे।

समास के भेद :

हिंदी में समास के मुख्य: छ माने जाते हैं

(1) अव्ययीभाव समास
(2) कर्मधारय समास
(3) द्विगु समास
(4) द्वंद्व समास
(4) तत्पुरुष समास
(4) बहुब्रीहि

उपर्युक्त भेदोंमें से प्रथम चार समासों का अध्ययन इस कक्षा में करेंगे।

(1) अव्ययीभाव समास :

- जिस समास में पहला पद प्रधान हो तथा वह शब्द अव्यय हो और सामासिक शब्द का क्रियाविशेषण के समान उपयोग हो, उसे 'अव्ययीभाव समास' कहते है।
- दूसरे शब्दों में अव्ययीभाव का पूर्वपद अव्यय होता है और उत्तरपद के मिल जाने के बाद भी समस्त पद अव्यय ही रहता है। (क्रियाविशेषण आदि अविकारी शब्द जिनका स्वरूप किसी भी लिंग, वचन या काल में प्रयोग करने पर बदलता नहीं है, वे अव्यय कहलाते है।)
- इन व्याख्याओं के संदर्भ में निम्नलिखित वाक्यों को पढ़कर समझिए।
  - वह यथाशक्ति प्रयत्न करेगा।
  - लड़का प्रतिदिन विद्यालय जाता है।
  - वह आजीवन लोगों की सेवा करता रहा।

समस्त पद	**विग्रह**
यथाशक्ति	शक्ति के अनुसार
प्रतिदिन	प्रत्येक दिन / दिन-दिन
आजीवन	जीवनभर / जीवन-पर्यंत

उदाहरण :

समस्त पद	विग्रह	समस्त पद	विग्रह
यथाविधि	विधि के अनुसार	यथानियम	नियम के अनुसार
यथामति	मति के अनुसार	यथासमय	समय के अनुसार
यथाशीघ्र	जितना शीघ्र हो	यथासंभव	जितना संभव हो सके
यथोचित	जो उचित हो	आजन्म	जन्म से लेकर
आमरण	मरण तक	आकंठ	कंठ तक
प्रतिवर्ष	प्रत्येक वर्ष	प्रतिपल	प्रत्येक पल
दिनोंदिन	दिन ही दिन में	बीचोबीच	बीच ही बीच में
रातोंरात	रात ही रात में	हाथोंहाथ	हाथ ही हाथ में
बेकाम	बिना काम के	प्रत्यक्ष	आँखों के सामने
भरपेट	पेट भर के	बेखटके	बिना खटके के

निम्नलिखित अव्ययीभाव समास का विग्रह कीजिए।

निर्भय	निर्विवाद	अनुरूप	बेरहम
बेफायदा	अनजाने	यथारूचि	प्रत्येक
घड़ी-घड़ी	प्रतिमास	यथार्थ	बेफायदा
अकारण	निर्विकार	अध्यात्म	यावज्जीवन

(2) कर्मधारय समास :

- जिस समास में पूर्वपद 'विशेषण' और उत्तरपद 'विशेष्य' हो या पूर्वपद 'विशेष्य' और उत्तरपद 'विशेषण' हो उसे कर्मधारय समास कहते हैं। इस समास में पूर्वपद तथा उत्तरपद में उपमेय-उपमान का संबंध भी हो सकता है।

  उपर्युक्त व्याख्या के संदर्भ में कर्मधारय समास के उदाहरण निर्देशित हैं-

पूर्वपद 'विशेषण' और उत्तरपद 'विशेष्य' हो ऐसे उदाहरण :

समस्त पद	विग्रह	समस्त पद	विग्रह
महापुरुष	महान पुरुष	अंधकूप	अंधा है जो कूप
पकवान्न	पक्व अन्न	महाविद्यालय	महान है जो विद्यालय
सुहास	सुंदर है जो हँसी	सूक्ष्माणु	सूक्ष्म है जो अणु
सुविचार	अच्छा है जो विचार	महायुद्ध	महान है जो युद्ध
नवांकुर	नव है जो अंकुर	सुलोचना	सुंदर है जिसके लोचन
महावीर	महान है जो वीर	प्रधानाध्यापक	प्रधान है जो अध्यापक
महात्मा	महान है जो आत्मा	नीलगाय	नीली है जो गाय

पूर्वपद 'विशेष्य' और उत्तरपद 'विशेषण' हो ऐसे उदाहरण :

समस्त पद	विग्रह
न्यायोचित	न्याय है जो उचित
अधपका	आधा है जो पका

उपमेय - उपमान का संबंध हो ऐसे उदाहरण :

- जिसकी तुलना किसी अन्य से की जाती है उसे उपमेय और जिससे तुलना की जाती है उसे उपमान कहा जाता है। जैसे - चरणकमल समस्त पद का विग्रह होगा चरण रूपी कमल। इसमें चरण उपमेय और कमल उपमान है।

पहला पद उपमेय हो ऐसे उदाहरण :

समस्त पद	**विग्रह**
स्त्रीरत्न	स्त्री रूपी रत्न
देहलता	देह रूपी लता
नरसिंह	नर रूपी सिंह
ग्रंथरत्न	ग्रंथ रूपी रत्न
नयनबाण	नयन रूपी बाण

पहला पद उपमान हो ऐसे उदाहरण :

समस्त पद	**विग्रह**
राजीवलोचन	राजीव के समान लोचन
प्राणप्रिय	प्राणों के समान प्रिय
भुजदंड	दंड के समान भुजा
मृगलोचन	मृग के समान लोचन
पाषाण-हृदय	पाषाण के समान है जो हृदय
कनकाभ	कनक के समान आभा
कनकलता	कनक के समान लता
कमलनयन	कमल के समान नयन
करकमल	कमल के समान कर

ध्यातव्य : जब पहला पद उपमान हो तो दोनों पदों के बीच में 'के समान' का प्रयोग किया जाता है।

निम्नलिखित समासों का विग्रह कीजिए।

दुरात्मा	क्रोधाग्नि
नीलकमल	चंद्रमुख
नीलांबर	चरणकमल
कापुरुष	मीनाक्षी
नीलकंठ	वज्रांग
नीलगगन	मधुमादन

(3) द्विगु समास :

- जहाँ समस्त पद का पहला शब्द संख्यावाचक अथवा परिमाणवाचक विशेषण होता है, वहाँ द्विगु समास होता है।

उदाहरण :

समस्त पद	**विग्रह**

1. त्रिकाल — त्रि (तीनों) कालों का समूह
2. त्रिफला — त्रि (तीन) फलों का समूह
3. पंचामृत — पंच (पाँच) अमृतों का समूह

– इन उदाहरणों में क्रमांक 1 और 2 में पहला शब्द संख्यावाचक विशेषण है और क्रमांक 3 में पहला शब्द परिमाणवाचक विशेषण है। अतः ये द्विगु समास हैं।

अन्य उदाहरण :

	समस्त पद	**विग्रह**
–	त्रिलोक	त्रि (तीन) लोकों का समूह
–	चौगुनी	चौ (चार) गुनी
–	नवरात्र	नव (नौ) रात्रियों का समूह
–	पंचनद	पाँच नदियों का समूह
–	चतुष्कोण	चार कोण वाला
–	नवग्रह	नव ग्रहों का समूह
–	अष्टाध्यायी	आठ अध्यायों का समाहार
–	चौमासा	चार मासों का समाहार
–	चवन्नी	चार आनों का समाहार
–	चौराहा	चार राहों का समाहार
–	सप्ताह	सात दिनों का समाहार
–	त्रिवेणी	तीन वेणियों का समाहार
–	तिरंगा	तीन रंगों का समाहार

निम्नलिखित द्विगु समास का विग्रह कीजिए।

–	नवरत्न	– दोपहर
–	पंचवटी	– अठवाड़ा
–	पंचप्रमाण	– त्रिलोकी
–	त्रिभुवन	– अठन्नी
–	नवरस	– द्विगु
–	दोपहर	– अठलोना
–	छमाही	– अष्टधातु
–	तिकोना	– षड्रस
		– पंचवदन

(4) द्वंद्व समास

– इस समास में समस्त पद के दोनों पद प्रधान होते हैं। समस्त पद का विग्रह करने पर बीच में

समुच्चयबोधक अव्यय 'और' अथवा 'या' शब्द लगाना पड़ता है। इसमें दोनों पदों को मिलाते समय मध्य-स्थित योजक लुप्त हो जाता है। जैसे - 'सत्य' और 'असत्य' का समस्त पद होगा 'सत्यासत्य'। यहाँ दोनों पद प्रधान हैं।

द्वंद्व समास के तीन प्रकार हैं-

(1) इतरेतर द्वंद्व समास :

इस कोटि के समास में समुच्चयबोधक अव्यय 'और' का लोप होता है। जैसे-

	समस्त पद	**विग्रह**
-	ऋषि-मुनि	ऋषि और मुनि
-	माता-पिता	माता और पिता
-	गाय-बैल	गाय और बैल
-	सीता-राम	सीता और राम
-	राधा-कृष्ण	राधा और कृष्ण
-	भाई-बहन	भाई और बहन

(2) वैकल्पिक द्वंद्व समास :

इस समास में विकल्प सूचक समुच्चयबोधक अव्यय 'या', 'वा', 'अथवा' का प्रयोग होता है, जिसका समास करने पर लोप हो जाता है। जैसे-

	समस्त पद	**विग्रह**
-	धर्माधर्म	धर्म या अधर्म
-	छोटा-बड़ा	छोटा या बड़ा
-	थोड़ा-बहुत	थोड़ा या बहुत
-	ठंडा-गरम	ठंडा या गरम
-	हाँ-ना	हाँ या ना
-	लाभालाभ	लाभ या अलाभ
-	जोड़-तोड़	जोड़ना या तोड़ना
-	गुण-दोष	गुण या दोष

(3) समाहार द्वंद्व समास :

जिस समास से उसके पदों के अतिरिक्त उसी तरह का और भी अर्थ सूचित हो, उसे समाहार द्वंद्व समास कहते हैं। जैसे-

-	दाल-रोटी	दाल, रोटी वगैरह
-	कपड़ा-लता	कपड़ा, लता वगैरह
-	सेठ-साहूकार	सेठ तथा साहूकार आदि धनी लोग
-	रुपया-पैसा	रुपये, पैसे, गहने वगैरह

ध्यातव्य बिन्दु : जब दोनों पद विशेषण हो और उसी अर्थ में आए तब वह द्वंद्व न होकर कर्मधारय हो जाता है। जैसे - भूखा-प्यासा लड़का रो रहा है। यहाँ 'भूखा-प्यासा' लड़के का विशेषण है। अतः कर्मधारय समास के अन्तर्गत आएगा।

निम्नलिखित द्वंद्व समास का विग्रह कीजिए।

- अपना-पराया अमीर-गरीब
- गंगा-यमुना लव-कुश
- स्त्री-पुरुष यश-अपयश
- स्वर्ग-नरक मान-सम्मान
- हानि-लाभ रुपया-पैसा
- कर्तव्याकर्तव्य देश-विदेश
- जीव-जन्तु देवासुर

●

24 कबीर के दोहे

कबीर

(जन्म : सन् 1398 ई. : निधन : सन् 1518 ई.)

भक्तिकालीन निर्गुण संत परंपरा में कबीर का स्थान सर्वोपरि हैं। जनश्रुति है कि कबीर की पत्नी का नाम लोई, पुत्र का नाम कमाल और पुत्री का नाम कमाली था। तत्कालीन सामाजिक अव्यवस्था के कारण कबीर विधिवत् शिक्षा नहीं पा सके किंतु प्रेम का ढाई अक्षर पढ़कर पंडित हो गए थे। उन्होंने कहा है कि, ''मसिकागद छूयौ नहीं, कलम गह्यौ नहीं हाथ।'' कबीर को स्वामी रामानंद से वेदांत का, सूफी कवि शेख तकी से सूफीमत का और वैष्णव साधुओं के संपर्क में आने से अहिंसा का तत्त्व मिला। उनकी कविता अनुभव का अथाह ज्ञान भण्डार है। जीवन की सच्चाई और वाणी में विश्वास के कारण उनकी कविता हृदय के तार झनझना देती है। कबीर ने अपने युग की विसंगतियों तथा अन्तर्विरोधों को देखकर अपनी कविताओं के माध्यम से उन पर खुलकर तीखा प्रहार किया है। ''मैं कहता आखिन की देखी, तू कहता कागद की लेखी'' से स्पष्ट होता है कि वे जन्म से विद्रोही, समाज सुधारक, धर्म सुधारक और अपने समय के अनुरूप कवि थे। इन्होंने अपनी रचनाओं में 'सधुक्कड़ी' भाषा का उपयोग किया है। जिसमें खड़ी बोली, ब्रजभाषा, पंजाबी, पूर्वी हिन्दी, अवधी आदि कई बोलियों का मिश्रण है। कबीर की वाणी का संग्रह 'बीजक' नाम से प्रसिद्ध है। इसके तीन भाग हैं- रमैनी, सबद, साखी। रमैनी और सबद ये गेय पद हैं तथा साखी में दोहे संकलित हैं।

प्रस्तुत दोहों में कबीर ने विभिन्न पहलुओं पर दृष्टिपात किया है। प्रथम दोहे में परमात्मा घट-घट में व्याप्त है, फिर भी हम देख नहीं पाते हैं, दूसरे दोहे में मुझमें जो कुछ है, वह ईश्वर का ही है और वह ईश्वर को सौंपने से अपना कुछ नहीं रहता है, तीसरे दोहे में जन्म सार्थक करने हेतु साधु पुरुषों की संगति करने का, चौथे दोहे में अप्रामाणिक रूप से संपत्ति इकट्ठी करके उसमें से दान करने पर स्वर्गप्राप्ति नहीं हो सकती हैं, पाँचवे दोहे में दुर्जनों की सज्जनों की विशेषता है, छठे में दूसरों की संपत्ति देखकर दु:खी होने के बजाय ईश्वर ने हमें जो दिया है उसमें संतोष रखना चाहिए, सातवें में संसार के पंच रत्न के बारे में, आठवें में बाह्याडंबर का विरोध, नौवे में सुख में भी भगवान को याद किया जाय तो दु:ख हो ही क्या?

कस्तूरी कुंडली बसै, मृग ढूँढे बन माहिं।
ऐसे घट-घट राम है, दुनिया देखे नाहिं ॥1॥

मेरा मुझमें कछु नहीं, जो कछु हय सो तेरा।
तेरा तुझको सौंपते, क्या कागेगा मेरा॥2॥

संत मिले सुख उपजे, दुष्ट मिले दु:ख होय।
सेवा कीजे संत की, तो जनम कृतार्थ सोय ॥3॥

एहरन की चोरी करे, करे सूई का दान।
ऊँचे चढ़कर देखते, कैतिक दूर विमान? ॥4॥

सोना सज्जन साधु जन, टूटि जुरै सौ बार।
दुर्जन कुंभ कुम्हार के, एकै धका दरार ॥5॥

रुखा सूखा खाई कै, ठण्डा पानी पीव।
देख पराई चूपड़ी, मत ललचावै जीव॥6॥

कबीर! इस संसार में, पंच रत्न हैय सार।
साधु मिलन, हरिभजन, दया-दीन-उपकार ॥7॥

काँकर पाथर जोरि कै, मसजिद लई चिनाय।
ता चढ़ि मुल्ला बाँग दै, क्या बहिरा हुआ खुदाय ॥8॥

दु:ख में सुमिरन सब करें, सुख में करै न कोय।
जो सुख में सुमिरन करे, तो दु:ख काहे को होय॥9॥

शब्दार्थ और टिप्पणी

कस्तूरी मृगनाभि से निकलनेवाला एक सुगंधित द्रव्य **कुंडली** नाभि **मृग** हरिन, हिरन **कृतार्थ** जिसका कार्य सिद्ध हो चुका हो, सन्तुष्ट, मुक्त **एहरन** निहई (एरण), लोहार का एक औज़ार **दरार** दरज **चूपडी** चूपडी हुई **सार** मुख्य, सत **दीन** नम्र, विनीत **काँकर** कंकड़ **पाथर** पत्थर **सुमिरन** स्मरण

स्वाध्याय

1. एक वाक्य में उत्तर दीजिए :

(1) मृग कस्तूरी को कहाँ ढूँढ़ता है?

(2) हमारा जन्म कृतार्थ करने के लिए किसकी सेवा करनी चाहिए?

(3) भवसागर तरने के लिए कौन-कौन से पाँच तत्त्व हैं?

2. निम्नलिखित भावार्थवाले दोहे ढूँढ़कर उनका गान कीजिए :

(1) परमात्मा घट-घट में व्याप्त है, फिर भी हम देख नहीं पाते हैं।

(2) हमें जो कुछ मिला है, वह ईश्वर का ही है और वह ईश्वर को सौंपने से अपना कुछ नहीं रहता है।

(3) अप्रामाणिक रूप से संपत्ति इकट्ठी करके उसमें से दान करने पर स्वर्गप्राप्ति नहीं हो सकती है।

(4) दूसरों की संपत्ति देखकर दु:खी होने के बजाय ईश्वर ने हमें जो कुछ दिया है उसमें संतोष रखना चाहिए।

3. निम्नलिखित दोहों का भावार्थ स्पष्ट कीजिए :

(1) संत मिले सुख उपजे, दुष्ट मिले दु:ख होय।
सेवा किजे संत की, तो जनम् कृतार्थ सोय ॥

(2) सोना सज्जन साधु जन, टूटि जुरै सौ बार।
दुर्जन कुंभ कुम्हार के, एकै धका दरार ॥

(3) काँकर पाथर जोरि कै, मसजिद लई चुनाय।
ता चढि मुल्ला बाँग दै, क्या बहिरा हुआ खुदाय ॥

(4) दु:ख में सुमिरन सब करें, सुख में करे न कोय।
जो सुख में सुमिरन करे, तो दु:ख काहे को होय॥

योग्यता-विस्तार

- कबीर के अन्य दोहे पढ़िए और संग्रह कीजिए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- इकाई में समाविष्ट दोहों का समूहगान करवाइए।
- कबीर के उन दोहों को ढूँढ़कर पढ़िए जिनमें बाह्याडंबरों का विरोध किया गया है।
- 'कबीर आज भी प्रासंगिक है' इस विषय पर एक परिचर्चा का आयोजन कीजिए ।

●

पूरक-वाचन

1 विमान से छलाँग

श्यामचन्द्र

इस पत्र में लेखक ने पैराटूपिंग (विमान से छलाँग) प्रशिक्षण के साहसिक अनुभवों का सजीव वर्णन किया है। विमान से छलाँग से पूर्व एक महीने का जमीनी प्रशिक्षण आवश्यक होता है। आगरा केन्ट में पैराटूपिंग मिलिट्री की एक कोर है, जिसमें इस प्रकार का प्रशिक्षण दिया जाता है। प्रशिक्षण के बाद में पैराशूट की सहायता से आकाश में उड़ते हुए विमान से जमीन पर छलाँग लगाई जाती है। इसी का मार्मिक वर्णन पत्र में किया गया है।

47, पैराटूपिंग कोर,
आगरा कैण्ट,
24-9-1981

फ्लाइट लेफ्टिनैंट बत्रा,

सस्नेह नमस्ते।

जैसा कि मैंने कहा था कि मैं पैराटूपिंग के अनुभव का पत्र में वर्णन करूँगा, यहाँ विस्तार से वृत्तान्त लिख रहा हूँ।

विमानों से छलाँग लगाकर पेराशूट के सहारे नीचे आनेवाले बहादुरों के बारे में मुझे बड़ी उत्सुकता रहती थी। कैसा महसूस होता होगा हवा में अकेले लटकना? कभी-कभी मैं यह भी सोचता कि यदि छतरी ही न खुले तो क्या हो?

लेकिन जब मैंने पैराटूपिंग (पैराशूट के सहारे विमाने से नीचे कूदने की विद्या) सीखनी शुरू की, तब मेरी समझ में आया कि पैराटूपर बनने के लिए सचमुच बहादुरी की आवश्यकता होती है। उसके लिए तंदुरस्ती तो ठीक होनी ही चाहिए, हवाई जहाज से छलाँग लगाने की हिम्मत भी होनी चाहिए। शुरू में तो बहुत ऊँचाई से नीचे की ओर देखना ही काफ़ी डरावना लगता है। जरा सोचो, कोई तुमसे वहाँ से नीचे कूदने के लिए कहे, तो क्या हो?

खैर, मेरी पैराटूपिंग की एक महीने की ट्रेनिंग शुरू हो गई। सबसे पहले थी ग्राउंड ट्रेनिंग। कुछ दिन हमें जमीन पर ही अभ्यास करना था। कुछ समय बाद जब हमने पैराशूट के बारे में कई बातें जान लीं, तो हमारे मन से धीरे-धीरे ऊँचाई का डर दूर होता गया और हम आदेश मिलते ही छलाँग लगाने के लिए मानसिक रूप से तैयार होते गये।

इसके पहले कि हम विमानों से छलाँग लगाते हमने फैन जंप लगाये। इसमें ऊँचे प्लेटफोर्म पर से कूदना होता है और इस बात का खास ध्यान रखना होता है कि जब हम जमीन पर गिरे तो हमारे लुढ़कने का तरीका ठीक वही हो, जो हमें सिखाया गया है।

फैन जंप में तो मैं काफ़ी सफल रहा, लेकिन अब देखना यह था कि जब विमान में से कूदने का समय आता है, तो वह छलाँग में कितनी बहादुरी और सफलता के साथ लगा सकता हूँ।

आखिर वह दिन भी आया, जब हमें विमान से छलाँग लगानी थी, विमान में बैठे मजे से खिड़की के बाहर झाँकना एक बात होती है और इतनी ऊँचाई पर से कूदना दूसरी ! शुरू-शुरू में कुछ समय तो डर लगता ही है, लेकिन छलाँग तो हमें लगानी ही थी। उसके लिए पूरे एक महीने की ट्रेनिंग जो ली थी। आज हमारी परीक्षा ही थी।

हम सभी विमान में बैठे और विमान उड़ा। धीरे-धीरे जमीन पर सारी चीजें छोटी होती जा रही थी। जमीन दूर होती जा रही थी और हम ऊपर उठते जा रहे थे। हम सब काफ़ी उत्तेजित थे। विमान में बैठकर सब ऊपर तो आ गये थे लेकिन अब नीचे जाने में, हमें अपना करतब दिखाना था। हमारी तैयारी भी पूरी थी।

विमान निश्चित ऊँचाई पर आ चुका था। अब हमें कूदना था। मैं पूरी हिम्मत के साथ दरवाजे के पास गया, बाहर की तेज हवा दरवाजे पर भी महसूस हो रही थी। मैं अपने पैराशूट और हेल्मेट वगैरह के साथ एकदम तैयार था। जैसे ही 'गो' की आवाज आये, मुझे नीचे कूदना था। अब मेरे दिमाग में छलाँग लगाने के सिवाय और कुछ नहीं था। पूरा ध्यान उसी पर केन्द्रित था। पल पल बीत रहा था। मैं बेसब्री से इंतजार कर रहा था।

'गो' की आवाज आई और मैं चला। दिल जोर से धड़क रहा था। पृथ्वी रेत के एक बड़े माँडल की तरह दिख रही थी और मैं तेज़ी से नीचे जा रहा था। वह बड़ा ही अनोखा अनुभव था। कुछ ही क्षण बीते थे कि मैंने पैराशूट खोल दिया। पैराशूट ऊपर उठा और छतरी की तरह फैल गया। इसके बाद मैं मजे से हवा में तैर सा रहा था। अपने आप पर गर्व सा महसूस हो रहा था।

मैं पृथ्वी के करीब आता जा रहा था। ऊपर से छोटी दिखनेवाली पृथ्वी पर की सभी चीजें धीरे-धीरे बड़ी हो गयी थीं। जमीन केवल 8-9 मीटर ही नीचे थी। मैंने अपने पैर सीधे कर लिये। अब मैं जल्दी ही उन्हें जमीन पर रखनेवाला था, कितना अच्छा होगा वह क्षण।

और लो! मैं जमीन पर पहुँच गया। हमारे प्रशिक्षक और कई लोग आसपास खड़े थे, मुझे और मेरे साथियों को बधाई देने के लिए।

साथियों को मेरी जयहिन्द।

आपका
राकेश प्रधान

शब्दार्थ और टिप्पणी

पैराट्रूपिंग आकाश में हवाई जहाज से पैराशूट (हवाई छत्री) द्वारा धरती पर छलाँग लगाकर उतरने की प्रक्रिया **ट्रेनिंग** प्रशिक्षण **ग्राउंड** मैदान, धरती **फैन जम्प** ऊँचे प्लेटफार्म से कूदना

●

2 राष्ट्र का स्वरूप

वासुदेवशरण अग्रवाल

(जन्म : सन् 1904 ई.; निधन : सन् 1966 ई.)

वासुदेवशरण अग्रवाल ने सन्म लखनऊ विश्वविद्यालय से एम.ए. किया । तदन्तर वे सन् 1940 ई. तक मथुरा के पुरातत्व संग्रहालय के अध्यक्ष पद पर रहे । बाद में उन्होंने पी.एच.डी. तथा डी.लिट्. की उपाधियाँ प्राप्त कीं । उन्होंने भारतीय पुरातत्व विभाग के अध्यक्ष पद का भी सफलतापूर्वक निर्वाह किया । सन् 1951 इ. में वे काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कॉलेज ऑफ इंडोलॉजी में प्रोफेसर नियुक्त हुए । वे भारतीय मुद्रा परिषद, भारतीय संग्रहालय परिषद् तथा ऑल इंडिया रयंटल कांग्रेक के सभापति रह चुके हैं । भारतीय संस्कृति और सभ्यता के अन्वेषक तथा इतिहास और पुरातत्व के गहन विद्वान के रूप में वे देश भर में सम्मान पाते रहे ।

उनकी लिखी हुई और प्रमुख सम्पादित पुस्तकें इस प्रकार हैं : 'उरुज्योति', 'कला और संस्कृति', 'कल्पवृक्ष', 'कादम्बरी', भारत की मौलिक एकता ।'

'राष्ट्र का स्वरूप' एक चिन्तनात्मक निबन्ध है । इसमें लेखक ने देश को राष्ट्र बनानेवाले तत्त्वों की चर्चा की है । भूमि, भूमि पर बसने वाले जन और जन की संस्कृति - ये ही तीन तत्त्व हैं जो एक देश को राष्ट्र बनाते हैं । इन तीनों का राष्ट्रीय जीवन में महत्त्व प्रतिपादित करके लेखक राष्ट्र की जनता को यह अनुरोध करता है कि वह इनका मूल्य पहचानें तथा इनका गौरव करें ।

भूमि, भूमि पर बसने वाला जन और जन की संस्कृति, इन तीनों के सम्मिलन से राष्ट्र का स्वरूप बनता है ।

भूमि का निर्माण देवों ने किया है, वह अनन्त काल से है । उसके भौतिक रूप, सौन्दर्य और समृद्धि के प्रति सचेत होना हमारा आवश्यक कर्तव्य है । भूमि के पार्थिव स्वरूप के प्रति हम जितने अधिक जाग्रत होंगे उतनी ही हमारी राष्ट्रीयता बलवती हो सकेगी । यह पृथ्वी सच्चे अर्थों में समस्त रास्ट्रीय विचारधाराओं की जननी है । जो राष्ट्रीयता पृथ्वी के साथ नहीं जुड़ी वह निर्मूल होती है । राष्ट्रीयता की जड़ें पृथ्वी में जितनी गहरी होंगी उतना ही राष्ट्रीय-भावों का अंकुर पल्लवित होगा । इसलिए पृथ्वी के भौतिक स्वरूप की आद्योपांत जानकारी प्राप्त करना, उसकी सुन्दरता, उपयोगिता और महिमा को पहचाना आवश्यक धर्म है । उदाहरण के लिए, पृथ्वी की उपजाऊ शक्ति को बढ़ाने वाले मेघ जो प्रति वर्ष समय पर आकर अपने अमृत जल से इसे सींचते हैं, हमारे अध्ययन की परिधि के अन्तर्गत आने चाहिए । उन मेघजलों से परिवर्धित प्रत्येक तृणलता और वनस्पति का सूक्ष्म परिचय प्राप्त करना भी हमारा कर्तव्य है ।

इस प्रकार जब चारोंओर से हमारे ज्ञान के कपाट खुलेंगे, तब सैंकड़ों वर्षों से शून्य और अन्धकार से भरे हुए जीवन के क्षेत्रों में नया उजाला दिखाई देगा ।

धरतीमाता की कोख में जो अमूल्य निधियाँ भरी हैं, जिनके कारण वह वसुन्धरा कहलाती है, उनसे कौन परिचित न होना चाहेगा ? लाखों-करोडों वर्षों से अनेक प्रकार की धातुओं को पृथ्वी के गर्भ में पोषण मिला है । दिन-रात बहने वाली नदियों ने पहाड़ों को पीस-पीस कर अगणित प्रकार की मिट्टियों से पृथ्वी की देह को सजाया है । हमारे भावी आर्थिक अभ्युदय के लिये इन सब की जाँच-पड़ताल अत्यन्त आवश्यक है । पृथ्वी की गोद में जन्म लेनेवाले खड़े पत्थर कुशल शिल्पियों से सँवारे जाने पर अत्यन्त सौंन्दर्य का प्रतीक बन जाते हैं । नाना भांति के अनगढ़ नग विंध्य की नदियों के प्रवाह में सूर्य की धूप से चिलकते रहते हैं, उन सिलवटों को जब चतुर कारीगर पहलदार कटाव पर लादे हैं तब उनके प्रत्येक घाट से नई शोभा और सुन्दरता फूट पड़ती है, वे अनमोल हो जाते हैं । पृथ्वी और आकाश के अन्तराल में जो कुछ सामग्री भरी है, पृथ्वी के चारों ओर फैले हुए गम्भीर सागर में जो जलचर एवं रत्नों की राशियाँ हैं, उन सबके प्रति चेतना और स्वागत के नए भाव राष्ट्र में फैलने चाहिए । राष्ट्र के नवयुवकों के हृदय में उन सबके प्रति जिज्ञासा की नई किरणें जब तक नहीं फूटतीं तब तक हम सोए हुए के समान हैं ।

विज्ञान और उद्योग दोनों को मिलाकर राष्ट्र के भौतिक स्वरूप का एक नया ठाट खड़ा करना है । यह कार्य प्रसन्नता, उत्साह और अथक परिश्रम के द्वारा नित्य आगे बढ़ाना चाहिए । हमारा यह ध्येय हो कि राष्ट्र में जितने हाथ हैं उनमें से कोई भी इस कार्य में भाग लिए बिना न रहे ।

मातृभूमि पर निवास करनेवाले मनुष्य राष्ट्र के दूसरे अंग हैं । पृथ्वी हो और मनुष्य न हों, तो राष्ट्र को कल्पना असम्भव है । पृथ्वी और जन दोनों के सम्मिलन से ही राष्ट्र का स्वरूप सम्पादित होता है । जन के कारण ही पृथ्वी मातृभूमि की संज्ञा प्राप्त करती है । पृथ्वी माता है और जन सच्चे अर्थों में पृथ्वी का पुत्र है - माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः । 'भूमि माता है, मैं उसका पुत्र हूँ' जन के हृदय में इस सूत्र का अनुभव ही राष्ट्रीयता की कुंजी है । इसी भावना से राष्ट्र निर्माण के अंकुर उत्पन्न होते हैं ।

यह भाव सशक्त रूप में जागता है तब राष्ट्र-निर्माण के स्वर वायुमण्डल में भरने लगते हैं । इस भाव के द्वारा ही मनुष्य पृथ्वी के साथ अपने सच्चे सम्बन्ध को प्राप्त करते हैं । जहाँ यह भाव नहीं है वहाँ जन और भूमि का सम्बन्ध अचेतन और जड़ बना रहता है । जिस समय भी जन का हृदय भूमि के साथ माता और पुत्र के सम्बन्ध को पहचानता है उसी क्षण आनन्द और श्रद्धा से भरा हुआ उसका प्रणाम-भाव मातृभूमि के लिए प्रकट होता है । यह प्रणाम-भाव ही भूमि और जन का दृढ़ बन्धन है । इसी दृढ़ भित्ति पर राष्ट्र का भवन तैयार किया जाता है । इसी दृढ़ चट्टान पर राष्ट्र का चिरजीवन आश्रित रहता है । इसी मर्यादा को मानकर राष्ट्र के प्रति मनुष्यों के कर्तव्य और अधिकारों का उदय हता है । जो जन पृथ्वी के साथ माता और पुत्र के सम्बन्ध को स्वीकार करता है, उसे ही पृथ्वी के वरदानों में भाग पाने का अधिकार है । माता के प्रति अनुराग और सेवा-भाव पुत्र का स्वाभाविक कर्तव्य है । वह एक निष्कारण धर्म है । स्वार्थ के लिए पुत्र का माता के प्रति प्रेम, पुत्र के अधःपतन को सूचित करता है । जो जन मातृभूमि के साथ अपना सम्बन्ध जोड़ना चाहता है उसे अपने कर्तव्यों के प्रति पहले ध्यान देना चाहिए ।

माता अपने सभी पुत्रों को समान भाव से चाहती है, इसी प्रकार पृथ्वी पर बसने वाले जन बराबर हैं । उनमें ऊँच और नीच का भाव नहीं है । जो मातृभूमि के हृदय के साथ जुड़ा हुआ है, वह समान अधिकार का भागी है । पृथ्वी पर निवासी करने वाले जनों का विस्तार अनंत है – नगर और जनपद, पुर और गाँव, जंगल और पर्वत नाना प्रकार के जनों से भरे हुए हैं । ये जन अनेक प्रकार की भाषाएँ बोलने वाले और अनेक धर्मों के मानने वाले हैं, फिर भी वे मातृभूमि के पुत्र हैं और इस कारण उनका सौहार्द भाव अखंड है । सभ्यता और रहन-सहन की दृष्टि से जन एक दूसरे से आगे पीछे हो सकते हैं, किन्तु इस कारण से मातृभूमि के साथ उनका जो सम्बन्ध है, उसमें कोई भेद-भाव उत्पन्न नहीं हो सकता । पृथ्वी के विशाल प्रांगण में सब जातियों के लिए समान क्षेत्र है । इतिहास के अनेक उतार-चढ़ाव पार करने के बाद भी राष्ट्र निवासी जन नई उठती लहरों से आगे बढ़ने के लिये आज भी अजर-अमर हैं । जन का सततवाही जीवन, नदी के प्रवाह की तरह है जिसमें कर्म और श्रम के द्वारा उत्थान के अनेक घाटों का निर्माण करना होता है ।

राष्ट्र का तीसरा अंग जन की संस्कृति है । मनुष्यों ने युग-युगों में जिस सभ्यता का निर्माण किया है, वही उसके जीवन की श्वास-प्रश्वास है। बिना संस्कृति के जन की कल्पना बन्धमात्र है, संस्कृति ही जन का मस्तिष्क है । संस्कृति के विकास और अभ्युदय के द्वारा ही राष्ट्र की वृध्धि सम्भव है । राष्ट्र के समग्र रूप में भूमि और जन के साथ-साथ जन की संस्कृति का महत्त्वपूर्ण स्थान है । यदि भूमि और जन अपनी संस्कृति से विरहित कर दिए जाएँ तो राष्ट्र का लोप समझना चाहिए । जीवन के विटप का पुष्प संस्कृति है । भूमि पर बसने वाले जन से ज्ञान के क्षेत्र में जो सोचा है और कर्म के क्षेत्र में जो रचा है - दोनों के रूप में हमें राष्ट्रीय संस्कृति के दर्शन मिलते हैं ।

जंगल में जिस प्रकार अनेक लता, वृक्ष और वनस्पति अपने अदम्य भाव से उठते हुए पास्परिक सम्मिलन से अविरोधी स्थिति प्राप्त करते हैं, उसी प्रकार राष्ट्रीय जन अपनी संस्कृतियों के द्वारा एक-दूसरे के साथ मिलकर राष्ट्र में रहते हैं। जिस प्रकार जलों के अनेक प्रवाह नदियों के रूप मे मिलकर समुद्र में एकरूपता प्राप्त करते हैं, उसी प्रकार राष्ट्रीय जीवन की अनेक विधियाँ राष्ट्रीय संस्कृति में समन्वय प्राप्त करती हैं । समन्वययुक्त जीवन ही राष्ट्र का सुखदायी रूप हैं ।

साहित्य, कला, नृत्य, गीत, आमोद-प्रमोद अनेक रूपों में राष्ट्रीय जन अपने अपने मानसिक भावों को प्रकट करते हैं । गाँवों और जंगलों में स्वच्छन्द जन्म लेने वाले लोकगीतों में तारों के नीचे विकसित लोककथाओं में संस्कृति का अमित भण्डार भरा हुआ है, जहाँ से आनन्द की भरपूर मात्रा प्राप्त हो सकती है । राष्ट्रीय संस्कृति के परिचय-काल में उन सबका स्वागत करने की आवश्यकता है ।

पूर्वजों ने चरित्र और धर्म, विज्ञान, साहित्य, कला और संस्कृति के क्षेत्र में जो कुछ भी पराक्रम किया है उस सारे विस्तार को हम गौरव के साथ धारण करते हैं और उसके तेज को अपने भावी जीवन में साक्षात् देखना चाहते हैं । जहाँ अतीत वर्तमान के लिए भाररूप नहीं है, जहाँ भूत वर्तमान का जकड़ रखना नहीं चाहता वरन् अपने वरदान से पुष्ट करके उसे आगे बढ़ाना चाहता है, उस राष्ट्र का हम स्वागत करते हैं ।

शब्दार्थ और टिप्पणी

भौतिक पंच महाभूत से संबंन्ध रखनेवाला, पार्थिव **निर्मूल** जड़ से उखड़ा हुआ, बिना जड़ या मूल का **आद्योपांत** शुरु से अंत तक **चीलवटों** किसी चीज़ को झपट कर ले लेना **विरहित** अलग **अभ्युदय** उन्नति, विकास, भाग्य खुलना **सौहार्द** सज्जनता, मित्रता, भाईचारा, सहृदय **सततवाही** निरन्तर, अविरत **कबन्ध** वह शरीर जिसका सिर नहीं हो, सिर रहित काया

●

3 कुण्डलियाँ

गिरिधर

(जन्म : सन् 1714 ई. निधन : सन् 18वीं शताब्दी)

सुविख्यात कवि गिरिधर राय के जीवन के संबंध में कोई विशेष जानकारी नहीं मिलती, किन्तु इतना अवश्य कहा जा सकता है कि ये अपने समय के अत्यंत लोकप्रिय कवि थे । इनके द्वारा रचित पाँच-सौ से अधिक कुण्डलियाँ 'गिरिधर' कविराय ग्रंथावली में संकलित हैं । इनकी कुण्डलियाँ नीति विषयक हैं । कवि के व्यापक जीवन-अनुभवों का संचित अमृत इनकी रचनाओं में जीवन-संदेश बनकर प्रकट हुआ है । कवि की भाषा-शैली सरल एवं सहज होते हुए भी नीति जैसे विषयों को समझाने में सक्षम है ।

प्रथम कुण्डली में कवि ने छोटे के महत्त्व को कम नहीं आँकने के लिए कहा क्योंकि कुल्हाड़ी छोटी होते हुए भी बड़े से बड़े विशालकाय वृक्ष को गिरा देती है । दूसरी कुण्डली में कवि ने बीती हुई घटना को भूल जाने में ही भलाई माना है । तीसरी कुण्डली में उन्होंने कार्य सम्पन्न होने तक अपने मन को एकाग्र चित्त रखने को कहा है इससे कार्य पूरा भी हो जाता है और लोगों को हँसने का मौका भी नहीं मिलता ।

(1)

सांई ये न विरोधिए, छोट बड़े सब भाय ।
ऐसे भारी वृक्ष को, कुल्हरी देत गिराय ।।
कुल्हरी देत गिराय, मारि के जमीं गिराई ।
टूक-टूक कै काटि, समुद्र में देत बहाई ।।
कह 'गिरिधर कविराय', फूट जेहि के घर आई ।
हिरणाकश्यप, कंस, गए बलि, रावण सांई ।

(2)

बीती ताहि बिसारि दे, आगे की सुधि लेई ।
जो बनि आवै सहज में, ताही में चित्त देई ।।
ताही में चित्त देई, बात जोई बनि आवै ।
दुर्जन हँसे न कोई, चित्त में खता न पावै ।।
कह गिरिधर कविराय, यहै करु मन परतीती ।
आगे को सुख समुझि, हो, बीती सो बीती ।।

(3)

साईं अपने चित्त की, भूलि न कहिए कोई ।
तब लग मन में राखिए, जब लग कारज होई ।।
जब लग कारज होई, भूलि कबहूँ नहिं कहिए ।
दुरजन हँसे न कोइ, आप सियरे ह्वै रहिए ।।
कह गिरिधर कवि राय बात चतुरना की ताई ।
करतूती कहीं देत आप कहिए नहीं साँई ।।

शब्दार्थ - टिप्पणी

कुंडलियाँ एक छंद-विशेष, जिसमें पहली दो पंक्तियाँ दोहे की और अंतिम चार पंक्तियाँ रोला की होती हैं । दोहे के अंतिम चरण को रोला छंद के प्रथम चरण के रूप में दोहराया जाता है और पहला शब्द ही छंद का अंतिम शब्द होता है। **विरोधिए** विपरीत भाव **कुल्हरी** कुल्हाड़ी **खता** कसूर **करूमन** कर्म, करनी **परतीती** प्रतीति **सियरे** शांत **चतुरन की ताई** समझदारों के लिए **करतूती** कर्म गुण

4 महान भारतीय वैज्ञानिक : विक्रम साराभाई

पी.सी.पटेल

(जन्म : सन् 1938 ई.)

भौतिक विज्ञान के प्राध्यापक पी.सी.पटेल का जन्म लणवा ग्राम (जिला-पाटन) गुजरात में हुआ एस.एससी. तक की पढ़ाई सर्व विद्यालय कड़ी (महेसाणा) में हुई थी । गुजरात कॉलेज अहमदाबाद से उन्होंने बी.ऐससी. तथा एम.ए. साइंस कॉलेज अहमदाबाद से एम.एससी. की पढ़ाई पूरी की । तत्पश्चात् वे एम.जी. साइंस कॉलेज में अध्यापक बने और सेवानिवृत्ति तक भौतिक विज्ञान का शिक्षणकार्य करते रहे । उन्होंने हिन्दी साहित्य संमेलन प्रयाग से हिन्दी विशारद की परीक्षा भी उत्तीर्ण की ।

विज्ञान, कम्प्यूटर, भौतिक विज्ञान से संबंधित उनके लगभग चौदह ग्रंथ अंग्रेज़ी-गुजराती में प्रकाशित हो चुके हैं। उनकी पुस्तक 'इजनेरी दर्शन' (इंजीनियर दर्शन) को गुजरात सरकार द्वारा प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया है । गुजरात विश्वकोश के लिए अधिकरण लेखक-संपादक के रूप में उन्होंने अमूल्य सेवाएँ दी हैं ।

यहाँ संकलित लेख हिन्दी में लिखा गया है जिसमें गुजरात के अमर सपूत विक्रम साराभाई की सेवाओं का समृद्धि एवं शांति के लिए उनकी प्रतिबद्धता तथा प्रयासों का परिचय मिलता है ।

आज भारत विज्ञान और तकनीकी - क्षेत्र में विश्व के विकसित राष्ट्रों की पंक्ति में आ रहा है, इसका बहुत कुछ श्रेय आज़ादी के बाद देश में हुए वैज्ञानिक अनुसंधान कार्यो को दिया जा सकता है । भारत में परमाणु ऊर्जा-उत्पादक की नींव डॉ. होमी जहाँगीर भाभा ने रखी थी । भारत परमाणु-ऊर्जा के शांतिमय उपयोग के लिए प्रतिबद्ध राष्ट्र है । डॉ. भाभा के आकस्मिक निधन के बाद इस क्षेत्र में उनके अधूरे कार्यो को पूरा करने की जिम्मेदारी जिस वैज्ञानिक पर आई, वह थे-डॉ. विक्रम साराभाई । भारत को अवकाश संशोधन एवं परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में प्रगति के पथ पर ले जाने के श्रेय भाभा, विक्रमभाई साराभाई जैसे वैज्ञानिकों को है ।

विक्रमभाई का जन्म अहमदाबाद के एक उद्योगपति परिवार में 12 अगस्त 1919 को हुआ था । इनके पिता का नाम श्री अंबालाल साराभाई तथा माता का नाम सरला देवी था । पारिवारिक वातावरण ने बालक साराभाई में उत्तम गुणों की नींव डाली । इनकी आरंभिक शिक्षा घर पर ही कुशल अध्यापकों-शिक्षकों की देखरेख में हुई । उन्होंने गुजरात कॉलेज अहमदाबाद में उच्च शिक्षा पाई तथा आगे की पढ़ाई के लिए उन्हें इंग्लैण्ड भेजा गया, जहाँ कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में उन्होंने भौतिक विज्ञान की पढ़ाई की ।

विक्रम साराभाई के परिवार में उस समय देश के विख्यात व्यक्तियों, विद्वानों का आना-जाना लगा रहता था। 1924 में रवीन्द्रनाथ टागोर और दीनबंधु एन्ड्रूज़ उनके पारिवारिक निवास 'रिट्रीट' पर आए । विक्रमभाई उस समय बालक थे । उन्हें देखते ही टैगोर बोल उठे - 'अरे ! यह बालक तो अत्यंत असाधारण और मेघावी है ।' यह थी उनके लिए भविष्यवाणी । प्रसिद्ध इतिहासविद् यहुनाथ सरकार, भौतिक विज्ञानी जगदीशचंद्र बोस और चन्द्रशेखर रामन, प्रसिद्ध अधिवक्ता चितरंजनदास और भूलाभाई देसाई मदनमोहन मालवीय, महादेव देसाई, समाजसेवी आचार्य कृपलाणी तथा साहित्यकार काका कालेलकर प्रभृति महानुभावों का प्रत्यक्ष परिचय उन्हें बचपण में ही मिला था । उनके कार्यो और जीवनशैली का विक्रमभाई पर अच्छा प्रभाव पड़ा । उनमें देशप्रेम की भावना विकसित हुई । इसीलिए कैम्ब्रिज से अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद उन्होंने भारत को अपनी कर्मभूमि बनाई । वे चाहते तो अपनी प्रतिभा, ख्याति और पारिवारिक संपर्को के बल पर विदेश की किसी भी प्रयोगशाला में अपना अनुसंधान कार्य कर सकते थे, पर भारत लौटकर उन्होंने बंगलोर स्थित भारतीय विज्ञान संस्थान (I.I.Sc.) में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित भौतिक वैज्ञानिक चन्द्रशेखर रमन के मार्गदर्शन में ब्रह्माण्ड किरणों पर अनुसंधान कार्य आरंभ किया । यहाँ उन्हें होमी जहाँगीर भाभा का सहयोग प्राप्त हुआ।

अपनी पारिवाकि सम्पन्नता का उपयोग उन्होंने देश के विकास के लिए किया । अहमदाबाद में अनुसंधान कार्य के लिए उन्होंने भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला (PRL की स्थापना तो की ही, साथ ही भारतीय कपड़ा उद्योग को आधुनिक बनाने के लिए अटीरा (ATIRA) - 'अहमदाबाद टेक्स्टाईल रिसर्च एसोसिएशन' की स्थापना की । दवाओं के उत्पादन

के क्षेत्र को भी अद्यतन बनाने का प्रयास किया । उद्योगों के कुशल प्रबंधन हेतु भारतीयों को तैयार करने के लिए अहमदाबाद में भारतीय प्रबंधन संस्थान (IIM) की स्थापना की, जो आज भी देश की अपने तरह की सर्वोत्तम संस्था मानी जाती है ।

विक्रम साराभाई एक साथ कुशल प्रबंधक, सफल, उद्योगपति, प्रखर वैज्ञानिक होने के साथ ही एक अच्छे शिक्षक रहे । परमाणु ऊर्जा और अवकाश अनुसंधान कार्यक्रमों के लिए उनकी लगन ने भारत को इस क्षेत्र में विश्व का एक अग्रणी राष्ट्र बनाया ।

परमाणु ऊर्जा का शांतिमय कार्यो के लिए उपयोग तथा अवकाश-अनुसंधान का संदेश-व्यवहार, शैक्षणिक कार्यो के लिए प्रयोग से उनके इरादे स्पष्ट होते हैं । उन्होंने इनके लिए आजीवन कार्य किया । इसमें विक्रमभाई का स्वदेश प्रेम, देश को स्वावलम्बी बनाने के इच्छा, स्वदेशी-भावना साफ झलकती है । विचार और व्यवहार में विक्रमभाई महात्मा गाँधी के बहुत समीप थे । उन्हीं की तरह विक्रमभाई आजीवन समर्पित एकनिष्ठ कर्मयोगी हैं । अनासक्त भाव से स्वधर्म निर्वाह करनेवाले वे विरल विभूति रहे । हम विक्रमभाई को भारत के परमाणु और अवकाश युग के पुरस्कर्ता के रूप में, विज्ञान और विकास, स्वदेश भावना और आधुनिकता के सार्थक समन्वयकर्ता के रूप में पाते हैं । वे ऐसे स्वप्नद्रष्टा थे जो रात्रि में देखे गए स्वप्न को दिन में साकार करना चाहते थे । "राष्ट्र के लिए क्या उत्तम है, यह आप निश्चित करें । जो जनता और राष्ट्र के लिए उत्कृष्ट ही वही करें ।" – यह था विक्रमभाई का वैज्ञानिकों के लिए प्रेरणामंत्र । अर्थात् आप वैज्ञानिक, इंजीनियर, तकनीशियन या विज्ञान के चाहक के रूप वह करें, जो जनता और राष्ट्र के विकास के लिए उत्कृष्ट हो, उपर्युक्त हो । यही तो है बुद्ध की बताई हुई विज्ञान की परिभाषा ।

विक्रमभाई को आधुनिक शंकराचार्य कहा जा सकता है, क्योंकि शंकराचार्य की तरह उन्होंने कश्मीर से कन्याकुमारी तक अनेक अनुसंधान शालाओं की स्थापना करके देश को विज्ञान और तक्नीकी के क्षेत्र में विकास के पथ पर अग्रसर करने हेतु वंदनीय कार्य किया । विश्वशांति की स्थापना को वे अपना धर्म मानते थे । अपने विचार, व्यवहार और वाणी के माध्यम से उन्होंने शांति का पैगाम दिया है । चंद्रमा पर 'शांति का सागर' नामक एक विस्तार है, जहाँ एक बड़ा-सा उल्कागर्त है । अंतरराष्ट्रीय खगोलीय संघ ने इस गर्त के साथ विक्रम साराभाई का नाम जोड़कर उनके खगोलीय अनुसंधान कार्यों को तो प्रतिष्ठा प्रदान की ही इस महान वैज्ञानिक को मानो अपनी भव्य भावांजलि भी दी है ।

विज्ञान को मानवता के साथ समन्वित करनेवाले इस विलक्षण विश्व नागरिक ने 30 दिसम्बर 1971 को कोवलम् (केरल) से विश्व को अलविदा कर दी ।

शब्दार्थ और टिप्पणी

तकनीकी प्राद्योगिकी **श्रेय** मान, सम्मान **अनुसंधान** आविष्कार, खोज, संशोधन **प्रभृति** जैसे, आदि **अनासक्त** बिना आसक्ति के, निस्पृह **पैगाम** संदेश **अवकाश** अंतरिक्ष

● ● ●